राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

@swatantraprabhatmedia @swatantramedia RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) @SwatantraPrabhatonline news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, शुक्रवार, 12 जून 2026

वर्ष 14, अंक 63, पृष्ट 04, मूल्यः 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

पुलिस के लगातार असहयोग के बाद आज लगभग 1:30 बजे माफियाओं से कब्जा मुक्त हुआ..03

लंबे समय से जियो सेवा बाधित, मॉडल विलेज कृष्णानगर के ग्रामीण परेशान. ..04

यूपी पुलिस को हाई कोर्ट की फटकार... अवैध हिरासत में रखने पर सुनाया बड़ा फैसला

- मुआवजे का आदेश
- इलाहाबाद हाई कोर्ट ने एक युवक को अवैध हिरासत में रखने पर यूपी पुलिस को फटकार लगाई है
- एक मामले की सुनवाई करते हुए कोर्ट ने पुलिस को पीड़ित शख्स को मुआवजा देने का भी आदेश दिया है
- आरोप है कि युवक को कथित तौर पर सिर्फ एक घरेलू झगड़े के कारण 24 घंटे तक पुलिस हिरासत (लॉकअप) में गैर-कानूनी तरीके से रखा गया था.

उत्तर प्रदेश पुलिस इन दिनों हाई कोर्ट के निशाने पर है. इलाहाबाद हाई कोर्ट लगातार पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े कर रहा है. इस बार हाई कोर्ट ने एक युवक को अवैध रूप से हिरासत में रखने पर उसे मुआवजा दिए जाने का फैसला सुनाया है. इससे पहले हाई कोर्ट ने कहा था कि यूपी पुलिस संविधान नहीं, बल्कि सत्ता की वफादार है. यानी सत्ता के कहने पर पुलिस काम कर रही है.

इलाहाबाद हाई कोर्ट ने कहा कि पुलिस अधिकारी लगातार नागरिकों के अधिकारों का उल्लंघन करते हैं, यह सोचकर कि उनके गलत कामों पर किसी का ध्यान नहीं जाएगा. उन्हें लगता है कि शायद ही हजारों में से ही कोई नागरिक अपने अधिकारों के संरक्षण के लिए कोर्ट का दरवाजा खटखटाएगा. इस कड़ी टिप्पणी के साथ जस्टिस जेजे मुनीर और जस्टिस संजीव कुमार की बेंच ने एक युवक को 25,000 रुपये का अंतरिम मुआवजा देने का आदेश दिया है।

आरोप है कि युवक को कथित तौर पर सिर्फ एक घरेलू झगड़े के कारण 24 घंटे तक पुलिस हिरासत (लॉकअप) में गैर-कानूनी तरीके से रखा गया था. इस मामले पर सुनवाई करते हुए इलाहाबाद हाई कोर्ट डबल बेंच ने फैसला सुनाते हुए कहा कि पुलिस द्वारा इस तरह कि कार्यवाई निंदनीय है इसलिए पीड़ित मतंबर मिश्रा निवासी प्रयागराज को 25 हजार रुपये अंतरिम मुआवजा और 10 हजार रुपये केस खर्च देने का आदेश दिया है।

क्या था पूरा मामला?

याचिकाकर्ता के अनुसार 26 नवंबर 2022 को जब वह देर शाम खेत से घर लौटे थे कि तभी एक पुलिस चौकी के तत्कालीन प्रभारी सब इंस्पेक्टर सूर्य प्रकाश दुबे उसके के घर पहुंचे. इसके बाद बिना कारण बताए खींचकर थाने ले गए. आरोप है कि उन्हें 24 घंटे तक लॉकअप में रखा गया और रिहाई के बदले 20 हजार रुपये मांगे. पुलिस ने आरोप लगाया कि पूरी कार्रवाई याचिकार्ता के भाई की बहू की घरेलू हिंसा संबंधी शिकायत के आधार पर की गई थी. जबकि इस मामले में कोई संज्ञेय अपराध दर्ज नहीं था।

कोर्ट ने सब इंस्पेक्टर को लगाई फटकार

हाई कोर्ट में सुनवाई के दौरान सब इंस्पेक्टर ने कहा कि याचिकाकर्ता खुद की इच्छा से चौकी आए थे और परिवार के बीच हुए घरेलू विवाद से छुटकारा चाहते थे. हालांकि कोर्ट ने इस दलील को खारिज करते हुए कहा कि पुलिस अधिकारी कोई धर्म गुरु,पंच परमेश्वर या सामुदायिक नेता नहीं होता, जिसके पास लोग खुद की इच्छा से पारिवारिक विवाद सुलझाने थाने में जाएं. बाद में कोर्ट ने यह भी माना कि याचिकाकर्ता के खिलाफ शुरु दंड प्रक्रिया संहिता के तहत दर्ज धाराएं अवैध हैं. इसका इस्तेमाल पुलिस ने अपने आर्थिक हित को साधने के लिए किया था जो पूरी तरह से निराधार और गैर-कानूनी है।

गलत तरीके से दर्ज किया केस

बेंच ने आगे कहा कि एक पुलिस अधिकारी के तौर पर लोग उनसे डरते थे. गैर-कानूनी हिरासत को छिपाने के लिए पुलिस ने पीड़ित को गैर-कानूनी हिरासत से रिहा करने के दो दिन बाद उनके खिलाफ धारा 107 और 116 के तहत कार्रवाई शुरू की. बेंच ने इस पर कड़ी आपत्ति जताई, क्योंकि उसने देखा कि ये कार्यवाई मुख्य रूप से पब्लिक प्लेस और शांति व्यवस्था को बनाए रखने के लिए होती है न कि घरेलू हिंसा के आरोप में किसी से अपनी निजी हित की भरपाई करने के लिए।

मूक दर्शक बनकर नहीं रह सकते... हाथी रमन के लिए क्यों टेंशन में है सुप्रीम कोर्ट? सरकार को दिया ये आदेश

- एससी ने आगे कहा, 'अगर हम इस तरह की अवहेलना को नजरअंदाज करते हैं, तो हम बेजुबान जानवरों के प्रति अपने फर्ज को निभाने में नाकाम रहेंगे. हम हमेशा मूकदर्शक बनकर नहीं रह सकते, खासकर बेजुबान जानवरों के मामलों में, जिनकी भलाई सबसे अधिक जरूरी है '

सुप्रीम कोर्ट ने एक केस की सुनवाई के दौरान कहा कि बेजुबान जानवरों की भलाई सबसे जरूरी है. साथ ही कोर्ट ने केरल सरकार को यह निर्देश दिया है कि वह 'रमन' नाम के हाथी की कस्टडी अपने हाथ में ले और उसे किसी सही रिहैबिलिटेशन सेंटर में रखा जाए. रमन राज्य का सबसे लंबा हाथी है, और उसकी ऊंचाई 10.53 फ़ीट है।

जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा की बेंच ने इस बात पर भी नाराजगी जताई कि रमन का जमकर व्यवसायिक इस्तेमाल किया गया और उसे धार्मिक जुलूसों तथा रस्मों में शामिल किया गया. बेंच ने गहरी नाराजगी जताते हुए कहा, 'यह सच में बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि जिस हाथी की बात हो रही है. वह केरल राज्य का सबसे लंबा हाथी है, उसका व्यवसायिक इस्तेमाल किया गया, जबकि इस तरह के इस्तेमाल पर रोक का आदेश पहले ही दिया जा चुका था और यह सब इस कोर्ट के सामने दिए गए एक अंडरटेकिंग के बावजूद हुआ।'

हमेशा मूकदर्शक बनकर नहीं रह सकते: एससी

बेंच ने आगे कहा, 'अगर हम इस तरह की अवहेलना को नजरअंदाज करते हैं, तो हम बेजुबान जानवरों के प्रति अपने फर्ज को निभाने में नाकाम रहेंगे. हम हमेशा मूकदर्शक बनकर नहीं रह सकते, खासकर बेजुबान जानवरों के मामलों में, जिनकी भलाई सबसे अधिक जरूरी है।'

यह साफ करते हुए कि रमन की कस्टडी देने का कोर्ट का आदेश एक अस्थायी उपाय है और इस पर अंतिम आदेश बाद में दिया जाएगा, बेंच ने कहा, 'केरल सरकार अपने खर्च पर हाथी की अस्थायी देखभाल कर सकती है. ऐसी स्थिति में, वह वाइल्डलाइफ़ (प्रोटेक्शन) एक्ट (Wildlife (Protection) Act, 1972) के तहत दिए गए कानूनी सुरक्षा उपायों के अनुसार उचित प्रशासनिक आदेश जारी कर सकता है।'

कोर्ट की अवमानना का दोषी, लगा जुर्माना

यह आदेश जयकृष्ण मेनन की ओर से दाखिल एक अवमानना याचिका पर आया. मेनन का आरोप था कि रमन 'माता अमृतानंदमयी मठ' का हाथी है और उसे देखभाल के लिए कुछ समय के लिए कृष्णनकुट्टी को सौंपा गया था.

कृष्णनकुट्टी को- जिसने एक विवादित वसीयत के आधार पर हाथी की कस्टडी अपने पास रखी थी - कोर्ट को दिए गए अंडरटेकिंग का जानबूझकर उल्लंघन करने के लिए अवमानना का दोषी पाया और उस पर 2 हजार रुपये का जुर्माना लगा दिया. कृष्णनकुट्टी ने दावा किया था कि गिफ्ट डीड के जरिए रमन को कानूनी रूप से उसे सौंपा गया था और वह पिछले 10-12 सालों से हाथी की लगातार देखभाल कर रहा है. हालांकि, कोर्ट ने राज्य के अधिकारियों को अवमानना ??के आरोप से बरी कर दिया, क्योंकि उन्होंने हाथी की मेडिकल जांच कराने की कोशिश की थी।

सबसे ऊंचा हाथी, थेचिकोट्टुकावु रामचंद्रन करीब 60 साल का है और उसे केरल में रमन के नाम से भी बुलाया जाता है. केरल में यह हाथी बहुत ही लोकप्रिय है।

संक्षिप्त ख़बरें

इग्नू में 36 विषयों में पीएचडी के लिए रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया शुरू, 1 जुलाई तक मौका

लखनऊ। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) ने पीएचडी में प्रवेश के लिए आवेदन शुरू कर दिए हैं। अभ्यर्थी 36 विषयों में से किसी में भी प्रवेश के लिए https://ignou-phd.samarth.edu.in/ पर एक जुलाई 2026 तक आवेदन कर सकते हैं। नया सत्र जुलाई से शुरू हो रहा है। इग्नू के वरिष्ठ क्षेत्रीय निदेशक व प्रमुख डॉ. अनिल कुमार मिश्र ने बताया कि मनोविज्ञान, मानव-विज्ञान, राजनीति शास्त्र, लोक प्रशासन, जैव रसायन विज्ञान, रसायन विज्ञान, भूगोल, भूविज्ञान, जीव विज्ञान, भौतिकी, सांख्यिकी, गणित, संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी, कंप्यूटर विज्ञान, शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा, पर्यावरण विज्ञान, ललित कला, रंगमंच, संगीत, नृत्य, समाजकार्य, प्रबंधन, वाणिज्य, पोषण विज्ञान, बाल विकास, गृह विज्ञान, व्यावसायिक शिक्षा, विकास अध्ययन, जेंडर और डेवलपमेंट अध्ययन, अनुवाद अध्ययन, फ्रेंच, अरबी, पत्रकारिता और जनसंचार कार्यक्रमों में अनुसंधान उपाधि के लिए आवेदन कर सकते हैं।

कमजोर वर्ग के अभ्यर्थियों को पांच प्रतिशत की छूट दी जाएगी

पीएचडी उपाधि को यूजीसी नियमावली-2022 के अनुरूप तैयार किया गया है। आवेदन करने के लिए अभ्यर्थी का 55 प्रतिशत अंकों के साथ परास्नातक पास होना आवश्यक है। अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़ा वर्ग व आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के अभ्यर्थियों को पांच प्रतिशत की छूट दी जाएगी। विश्वविद्यालय ने पूर्णकालिक एवं अंशकालिक दोनों ही श्रेणियों में पीएचडी का अवसर दिया है। जो अभ्यर्थी अंशकालिक पीएचडी कार्यक्रम में प्रवेश लेना चाहते हैं, उन्हें अपने विभाग से अनापत्ति प्रमाण-पत्र लेना आवश्यक है। क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अनामिका सिन्हा ने बताया कि इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए चार श्रेणियों में आवेदन किया जा सकता है। प्रथम श्रेणी में अभ्यर्थी को यूजीसी नेट के साथ जेआरएफ परीक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है। इस श्रेणी में प्रवेश साक्षात्कार के माध्यम से दिया जाएगा।

फिर चर्चा में हरियाणवी डांसर सपना चौधरी, पति के खिलाफ पहुंचीं दिल्ली कोर्ट

- सपना चौधरी ने पति वीर साहू के खिलाफ कोर्ट का दरवाजा खटखटाया
- कोर्ट ने पति को संपर्क करने और परेशान करने से रोका
- अगली सुनवाई 25 जुलाई को, सपना मायके में रह रही हैं

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पश्चिमी दिल्ली। हरियाणवी डांसर और गायिका सपना चौधरी की निजी जिंदगी एक बार फिर चर्चा में आ गई है। सपना चौधरी ने अपने पति और हरियाणवी गायक वीर साहू के खिलाफ मारपीट और प्रताड़ना के आरोप लगाते हुए दिल्ली की द्वारका महिला कोर्ट में याचिका दायर की है। मंगलवार को मामले की प्रारंभिक सुनवाई करते हुए अदालत ने सपना चौधरी को अंतरिम राहत प्रदान की। कोर्ट ने वीर साहू को अगली सुनवाई तक सपना चौधरी से किसी भी प्रकार का संपर्क करने, उनके घर या कार्यस्थल पर जाने तथा उन्हें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से परेशान करने से रोक दिया है।

हरियाणवी डांसर ने छोड़ा ससुराल

अदालत में सपना चौधरी की ओर से वीडियो, ऑडियो और अन्य इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य भी प्रस्तुत किए गए हैं। इन साक्ष्यों के आधार पर अदालत ने मामले को सुनवाई योग्य मानते हुए अगली तारीख 25 जुलाई निर्धारित की है।

सूत्रों के अनुसार, वैवाहिक विवाद बढ़ने के बाद सपना चौधरी अपने ससुराल से अलग हो चुकी हैं। वर्तमान में वह द्वारका एक्सप्रेस-वे क्षेत्र स्थित अपने मायके में रह रही हैं।

2020 में की थी लव मैरिज

सपना चौधरी और वीर साहू का विवाह वर्ष 2020 में पंजाब में हुआ था। दोनों के दो बेटे हैं। सपना का पैतृक संबंध हरियाणा के हिसार जिले से है, जबकि वीर साहू भी हरियाणवी संगीत जगत का चर्चित नाम माने जाते हैं।

25 जुलाई को अगली सुनवाई

फिलहाल मामले में अदालत की ओर से अंतरिम संरक्षण आदेश जारी किया गया है। अब सभी की निगाहें 25 जुलाई को होने वाली अगली सुनवाई पर टिकी हैं, जहां अदालत के समक्ष दोनों पक्षों की दलीलों और प्रस्तुत साक्ष्यों पर आगे विचार किया जाएगा। इस संबंध में सपना चौधरी से संपर्क करने की कोशिश की गई पर, उन्होंने बात करने से इनकार कर दिया।

गोगी गिरोह के बदमाशों की हत्या की साजिश रच रहे टिल्लू ताजपुरिया गिरोह के दो शूटर गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली। रोहिणी कार्ट में गैंगवार में मारे गए कुख्यात गैंग्सटर जितेंद्र उर्फ गोगी गिरोह के बदमाशों की हत्या की साजिश रच रहे टिल्लू ताजपुरिया गिरोह के दो शूटर को दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार बदमाशों की पहचान सुल्तानपुरी के जतिन और अलीपुर के विनय मान उर्फ बिट्टू के रूप में हुई है।

विदेश में बैठे टिल्लू गिरोह के बदमाशों ने दोनों को गोगी गिरोह के बदमाशों की हत्या करने के निर्देश दिए थे। इनके कब्जे से पुलिस ने दो पिस्टल, सात कारतूस और मोबाइल बरामद किया है। पुलिस इनसे पूछताछ कर गिरोह में शामिल अन्य बदमाशों के बारे में पता लगा रही है। स्पेशल सेल के डीसीपी नारा चैतन्य के मुताबिक, संगठित अपराध के खिलाफ लगातार कार्रवाई के तहत, स्पेशल सेल जबरन वसूली, टारगेटेड किलिंग और गैंगवार में शामिल आपराधिक गिरोहों पर कड़ी नजर रख रही है। इसी दौरान जानकारी मिली कि विदेश से निर्देश दे रहे टिल्लू ताजपुरिया गिरोह के फरार बदमाशों ने अपने गुर्गों को विरोधी गोगी गिरोह के सक्रिय बदमाशों को निशाना बनाने का काम सौंपा था।

गिरोह के सदस्य एक-दूसरे को निशाना बनाते रहे

2014 से जितेंद्र मान उर्फ गोगी और टिल्लू ताजपुरिया गिरोह के बीच हिंसक दुश्मनी चल रही है। दोनों गिरोह के सरगनाओं की हत्या के बाद भी गिरोह के सदस्य एक-दूसरे को निशाना बनाते रहे। इसे देखते हुए टिल्लू गिरोह के सक्रिय सदस्यों के बारे में जानकारी जुटाने के लिए मुखबिरों को सक्रिय किया गया था। एक महीने की लगातार कोशिशों के बाद, टीम ने टिल्लू गिरोह के कुछ ऐसे सदस्यों की पहचान की जो हमले के लिए तय किए गए लक्ष्यों की रेकी कर रहे थे। इसके बाद आठ जून को टीम ने जतिन को एक पिस्टल और पांच कारतूस के साथ तब पकड़ा, जब वह गोगी गिरोह के एक सदस्य को निशाना बनाने जा रहा था। उसने बताया कि एक महीने से वह और उसके साथी विदेश में बैठे गिरोह के बदमाशों के कहने पर विरोधी गिरोह के सदस्यों को खत्म करने के मकसद से उनके

बारे में जानकारी इकट्ठा कर रहे थे और रेकी कर रहे थे। उससे पूछताछ के बाद हरिद्वार से विनय मान को गिरफ्तार किया गया। उसकी निशानदेही पर एक रिवाल्वर और दो कारतूस बरामद किए गए।

मुखबिर होने के शक में विनय मान के पिता की हुई थी हत्या

पूछताछ में पता चला कि टिल्लू गिरोह का मुखबिर होने के शक में गोगी ने 2017 में देवेंद्र सिंह (विनय मान के पिता) की हत्या कर दी थी। उस मामले में एक आरोपित को गिरफ्तार किया गया था, लेकिन बाद में ट्रायल कोर्ट ने उसे बरी कर दिया था। गोगी गिरोह से अपने पिता की हत्या का बदला लेने के लिए विनय मान ने टिल्लू ताजपुरिया से दोस्ती की।

कोर्ट ने 4 जुलाई को दिल्ली के पीडब्लू डी मंत्री प्रवेश वर्मा को किया तलब, AAP नेता के खिलाफ मानहानि केस में बदले जज

- » प्रवेश वर्मा को 4 जुलाई तक बयान दर्ज कराने का समय मिला
- » सौरभ भारद्वाज ने मंत्री पद के दुरुपयोग का आरोप लगाया था
- » वर्मा ने आरोपों को झूठा और छवि खराब करने वाला बताया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली। राउज एवेन्यू स्थित अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत ने भाजपा नेता प्रवेश वर्मा को आम आदमी पार्टी के नेता सौरभ भारद्वाज के खिलाफ दायर आपराधिक मानहानि मामले में बयान दर्ज कराने के लिए चार जुलाई तक का समय दिया है। अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट नेहा मित्तल ने मामले की सुनवाई के दौरान प्रवेश वर्मा को राहत देते हुए अगली तारीख चार जुलाई तय की। इससे पहले इस मामले की सुनवाई अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट पारस दलाल कर रहे थे। जिन्होंने आठ जून को खुद को मामले की सुनवाई से अलग कर लिया था। उनके द्वारा पहले प्रवेश वर्मा को नौ और 11 जून को बयान दर्ज कराने का निर्देश दिया गया था।

सौरभ भारद्वाज ने लगाए कौन से आरोप?

याचिका के अनुसार, 15 और 16 मई को इंटरनेट मीडिया में किए गए पोस्ट में सौरभ भारद्वाज ने आरोप लगाया था कि प्रवेश वर्मा ने मंत्री पद का दुरुपयोग कर अपने एक सहयोगी को लगभग 500 करोड़ रुपये की संपत्ति वाले निजी स्कूल ट्रस्ट में ट्रस्टी नियुक्त कराया। साथ ही यह भी आरोप लगाया गया था कि उन्होंने ऐसे कर्मचारियों के पक्ष में हस्तक्षेप किया जो पाक्सो मामले में आरोपित हैं। प्रवेश वर्मा का कहना है कि ये आरोप पूरी तरह झूठे, भ्रामक और उनकी सार्वजनिक छवि को नुकसान पहुंचाने की नीयत से लगाए गए। उनका दावा है कि इंटरनेट मीडिया पर किए गए इन पोस्टों से उनकी प्रतिष्ठा को गंभीर क्षति पहुंची है।

करोड़ों की आम मंडी बनी शोपीस, हाईवे किनारे अस्थायी मंडी से बढ़ रही अव्यवस्था

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मलिहाबाद। विश्व प्रसिद्ध मलिहाबादी आम के सीजन में किसानों, व्यापारियों और खरीदारों की सुविधा के लिए करोड़ों रुपये की लागत से निर्मित नवीन आम मंडी इस बार भी लगभग खाली पड़ी हुई है। दूसरी ओर, आम का अधिकांश कारोबार पहले की तरह मलिहाबाद चौराहे पर संचालित अस्थायी मंडी से हो रहा है, जिससे राष्ट्रीय राजमार्ग पर यातायात व्यवस्था प्रभावित हो रही है और दुर्घटनाओं का खतरा लगातार बना हुआ है। जानकारी के अनुसार, किसानों और व्यापारियों को आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराने तथा हाईवे पर लगने वाले जाम से राहत दिलाने के उद्देश्य से नई आम मंडी का निर्माण कराया गया था। मंडी में पर्याप्त स्थान, दुकानें और अन्य बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध हैं। इसके बावजूद अधिकांश व्यापारी अब भी चौराहे के पास लगने वाली अस्थायी मंडी में कारोबार करना अधिक सुविधाजनक समझ रहे हैं।

अस्थायी मंडी के संचालन के कारण राष्ट्रीय राजमार्ग के दोनों किनारों पर ट्रकों और अन्य बड़े वाहनों की लंबी कतारें दिखाई दे रही हैं। आम की लोडिंग और अनलोडिंग के लिए वाहन सड़क किनारे खड़े किए जा रहे हैं, जिससे राहगीरों और स्थानीय लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। क्षेत्रवासियों का कहना है कि आम सीजन अपने चरम पर पहुंचने के साथ ही यातायात व्यवस्था और अधिक प्रभावित हो सकती है। हैरानी की बात यह है कि अस्थायी मंडी और नवीन मंडी के बीच की दूरी महज तीन से चार किलोमीटर है। इसके बावजूद करोड़ों रुपये की लागत से तैयार की गई आधुनिक मंडी का अपेक्षित उपयोग नहीं हो पा रहा है। जबकि हाईवे किनारे अस्थायी रूप से मंडी संचालित होने से सुरक्षा और यातायात दोनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि पिछले वर्ष भी मलिहाबाद चौराहे पर इसी तरह अस्थायी मंडी संचालित की गई थी। उस दौरान यातायात अव्यवस्था के साथ कई हादसे भी सामने आए थे। इसके बावजूद इस वर्ष भी स्थिति में कोई बड़ा बदलाव देखने को नहीं मिल रहा है। हाईवे किनारे खड़े ट्रकों और अन्य वाहनों के कारण

दुर्घटनाओं की आशंका लगातार बनी हुई है। बताया जा रहा है कि नवीन मंडी में करीब 70 दुकानों का निर्माण किया गया है और अधिकांश दुकानों का आवंटन भी हो चुका है। इसके बावजूद मंडी पूरी तरह से संचालित नहीं हो पा रही है। इससे करोड़ों रुपये खर्च कर तैयार की गई इस परियोजना की उपयोगिता पर सवाल उठने लगे हैं।

इस संबंध में मंडी सचिव का कहना है कि इस बार अधिक से अधिक दुकानों को नवीन मंडी में स्थानांतरित करने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने उम्मीद जताई कि आने वाले दिनों में अधिकांश दुकानें नई मंडी में संचालित होने लगेंगी। हालांकि फिलहाल नई मंडी में सन्नाटा और अस्थायी मंडी में बढ़ती चहल-पहल प्रशासनिक दावों और जमीनी हकीकत के बीच का अंतर साफ तौर पर दिखा रही है।

अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि जब किसानों, व्यापारियों और खरीदारों की सुविधा के लिए आधुनिक मंडी का निर्माण कराया गया है, तो उसका पूरा लाभ आखिर कब मिलेगा। फिलहाल करोड़ों रुपये की लागत से बनी नवीन आम मंडी अपने उद्देश्य की पूर्ति का इंतजार कर रही है, जबकि हाईवे किनारे संचालित अस्थायी मंडी यातायात और सुरक्षा के लिए चुनौती बनी हुई है।

राष्ट्र के उत्सव में मोहन भागवत ने आत्ममंथन का दीप जलाया

[विश्वगुरु की राह में सबसे बड़ा सवाल: क्या हम तैयार हैं?]

[उत्सव के उजाले में मोहन भागवत ने परछाइयों की ओर इशारा किया]

राजनीति में ऐसे क्षण विरले आते हैं, जब कोई वाक्य भाषण की सीमा लांघकर राष्ट्रीय विमर्श का दर्पण बन जाता है। दावों की ऊंचाई और हकीकत की जमीन के बीच खड़े भारत को नागपुर से एक सीधा संदेश मिला। रेशीमबाग में संघ प्रमुख डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि 'हमारी तैयारी अभी अधूरी है, यही हमें विश्वगुरु बनने से रोक रहा है'। यह कथन इसलिए महत्वपूर्ण नहीं कि इसे संघ प्रमुख ने कहा, बल्कि इसलिए कि यह उस दौर में आया है जब उपलब्धियों का उत्सव अक्सर आत्ममंथन की आवश्यकता को ढंक देता है। राष्ट्रों का उत्थान जयघोषों से नहीं, अपनी कमियों को पहचानने और उन्हें दूर करने की क्षमता से होता है। भागवत ने दरअसल उस असुविधाजनक प्रश्न को सामने रख दिया, जिससे बचने की आदत राजनीति को भी है और समाज को भी—क्या हम वास्तव में उतने तैयार हैं, जितना हमारा दावा है?

भारत आज केवल एक देश नहीं, बल्कि वैश्विक अपेक्षाओं का केंद्र बनता जा रहा है। पश्चिम आर्थिक चुनौतियों से जूझ रहा है, पश्चिम एशिया अस्थिरता की चपेट में है और वैश्विक व्यवस्था नए संतुलन की तलाश में भटक रही है। ऐसे दौर में भारत की सभ्यतागत चेतना, लोकतांत्रिक परंपरा और सांस्कृतिक विस्तार उसे अलग पहचान देते हैं। दुनिया भारतीय दृष्टि को सुनने को तैयार है, लेकिन वैश्विक मंच पर सम्मान केवल विचारों से नहीं, सामर्थ्य से मिलता है। इतिहास गवाह है कि नैतिक नेतृत्व उसी का स्वीकार किया जाता है, जिसके पास आर्थिक ताकत, तकनीकी श्रेष्ठता और मजबूत संस्थाएं हों। भागवत का संकेत स्पष्ट था—विश्वगुरु का स्थान घोषणा से नहीं, योग्यता और तैयारी से हासिल होता है।

भारत की उपलब्धियां जितनी बड़ी हैं, उतने ही बड़े उसके सामने खड़े कुछ अनुत्तरित प्रश्न भी हैं। अंतरिक्ष मिशनों से लेकर डिजिटल परिवर्तन, वैश्विक कूटनीति से लेकर आधारभूत विकास तक देश ने उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की है। इसके बावजूद गुणवत्तापूर्ण रोजगार, उत्कृष्ट शिक्षा, शोध की संस्कृति, न्यायिक दक्षता और सामाजिक समरसता जैसे क्षेत्र अभी और सुदृढ़ीकरण की मांग करते हैं। किसी राष्ट्र की परिपक्वता केवल उसकी सफलताओं से नहीं, बल्कि अपनी कमियों को देखने की क्षमता से भी मापी जाती है। आत्मप्रशंसा प्रगति को धीमा करती है, जबकि आत्ममूल्यांकन उसे नई दिशा देता है।

हमारे सार्वजनिक जीवन की विडंबना यह है कि गंभीर विमर्श भी जल्द ही राजनीतिक संघर्ष का औजार बन जाता है। भागवत के वक्तव्य के साथ भी यही हुआ। विपक्ष ने इसे सत्ता पर परोक्ष प्रश्नचिह्न बताया, तो समर्थकों ने इसे विकास की गति बढ़ाने का संदेश माना। दोनों पक्षों के अपने तर्क हैं, लेकिन इस शोर में मूल मुद्दा ओझल हो गया। विश्वगुरु बनने का लक्ष्य न किसी एक सरकार का एजेंडा है, न किसी दल की उपलब्धि। यह पीढ़ियों के पुरुषार्थ, मजबूत संस्थाओं और समाज की सामूहिक चेतना से साकार होने वाली लंबी राष्ट्रीय यात्रा है। इसे राजनीतिक लाभ-हानि की संकीर्ण कसौटी पर नहीं परखा जा सकता।

भारत की असली कमी पूंजी या प्रतिभा की नहीं, राष्ट्रीय दृष्टि और अनुशासन की है। देश के पास विशाल युवा आधार, बड़ा बाजार, कुशल मानव संसाधन और ऐतिहासिक अवसर मौजूद हैं। चुनौती इन्हें संगठित राष्ट्रीय शक्ति में बदलने की है। विश्वविद्यालयों को ज्ञान-सृजन का केंद्र बनना होगा, उद्योगों को नवाचार का, राजनीति को दीर्घदृष्टि का और समाज को सहअस्तित्व का। यदि सामाजिक ध्रुवीकरण गहराता रहा, शिक्षा औसत स्तर पर अटकी रही और शोध उधार के विचारों पर टिका रहा, तो केवल ऊंची विकास दर भी भारत को वह वैश्विक प्रतिष्ठा नहीं दिला सकेगी जिसकी कल्पना की जाती है। विश्वगुरु होने का अर्थ उपदेश देना नहीं, बल्कि ऐसा राष्ट्रीय आचरण गढ़ना है जिसे दुनिया उदाहरण मानकर अपनाना चाहे।

भागवत के वक्तव्य का सबसे महत्वपूर्ण संदेश आत्मसंतोष के खतरे को लेकर है। इतिहास बताता है कि सभ्यताओं को बाहरी चुनौतियों से अधिक नुकसान भीतर पनपी आत्ममुग्धता पहुंचाती है। जिस क्षण कोई समाज स्वयं को पूर्ण और निर्विवाद मान लेता है, उसी क्षण उसकी प्रगति की गति मंद पड़ने लगती है। भारत के लिए यह आत्मप्रशंसा नहीं, आत्मसंस्कार का समय है। यह मान लेना कि अभी कई मंजिलें बाकी हैं, कमजोरी नहीं बल्कि परिपक्वता का प्रमाण है। अपनी कमियों को पहचानने वाले राष्ट्र उन्हें दूर करने का मार्ग भी खोज लेते हैं, जबकि उन्हें नजरअंदाज करने वाले अंततः उन्हीं सीमाओं में घिर जाते हैं।

संघ प्रमुख के बयान का महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि इसमें उपलब्धियों पर प्रश्न नहीं, उन्हें टिकाऊ बनाने की चिंता दिखाई देती है। यह निराशा नहीं, दूरदृष्टि का स्वर है। यदि भारत वैश्विक व्यवस्था में प्रभावी नेतृत्व की आकांक्षा रखता है, तो उसे केवल आर्थिक शक्ति तक सीमित नहीं रहना होगा; ज्ञान, नवाचार और सामाजिक भरोसे में भी अग्रणी बनना पड़ेगा। विश्व नेतृत्व का आधार सामर्थ्य से बनता है, लेकिन उसकी स्वीकार्यता नैतिक विश्वसनीयता से तय होती है। भारत के पास दोनों हासिल करने की क्षमता है, शर्त केवल इतनी है कि वह दावों और धरातल के बीच मौजूद अंतर को ईमानदारी से पहचाने।

इतिहास हर राष्ट्र को अवसर देता है, लेकिन नेतृत्व का अधिकार वही राष्ट्र अर्जित करते हैं जो अपनी आकांक्षाओं को उपलब्धियों में बदलने का सामर्थ्य रखते हैं। भागवत का वक्तव्य इसी सत्य की याद दिलाता है।

भारत के पास गौरवशाली विरासत, व्यापक संभावनाएं और अपार शक्ति है। लेकिन इन्हें वैश्विक नेतृत्व में बदलने के लिए अभी लंबी तैयारी और निरंतर सुधार की आवश्यकता है। यह समय आत्मसंतोष का नहीं, आत्मनिर्माण का है। विश्वगुरु का स्थान नारों दावों या प्रतीकों से नहीं मिलता; उसे ज्ञान, सामर्थ्य, अनुशासन, नवाचार और उपलब्धियों की निरंतर साधना से अर्जित करना पड़ता है। भारत के सामने मंजिल स्पष्ट है, अब उसकी गति और तैयारी ही तय करेगी कि वह इतिहास में एक संभावना बनकर दर्ज होगा या एक उपलब्धि बनकर।

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत'

टूटती तृणमूल कांग्रेस और ममता: संगठनात्मक कमजोरी और जनविश्वास का संकट

संपादक/लेखक: राजीव शुक्ला

पश्चिम बंगाल की राजनीति में तीन दशक से छाई तृणमूल कांग्रेस आज अंदरूनी दरारों और संगठनात्मक टूटन के दौर से गुजर रही है। 2011 में 34 साल पुराने वाम मोर्चे को उखाड़ फेंकने वाली पार्टी अब खुद अपने ही वजन तले डगमगा रही दिखती है। तृणमूल की सबसे बड़ी समस्या बन गई है नेताओं की लगातार नाराजगी और दल-बदल। 2021 के विधानसभा चुनाव के बाद भी कई विधायक, सांसद और जिला स्तर के नेता पार्टी छोड़कर भाजपा, कांग्रेस और वाम दलों में चले गए। शुभेंदु अधिकारी, मुकुल रॉय, राजीव बनर्जी जैसे कद्दावर नेताओं का जाना संगठन में भरोसे की कमी को दर्शाता है। नीचे के स्तर पर भी ब्लॉक और पंचायत स्तर पर गुटबाजी खुलकर सामने आ रही है।

नियोग, कोयला, गोरू तस्करी और राशन घोटाले जैसे मामलों में पार्टी के कई वरिष्ठ नेताओं के नाम सामने आए। श्वष्ठ और छ्ष्ठ की कार्रवाई ने संगठन की साख को नुकसान पहुंचाया। आम लोगों में यह धारणा मजबूत हुई है कि सत्ता के साथ भ्रष्टाचार भी जड़ें जमा चुका है। इससे जमीनी कार्यकर्ता हतोत्साहित हैं और मतदाता का एक हिस्सा विकल्प तलाश रहा है।

टीएमसी आज भी पूरी तरह ममता बनर्जी के व्यक्तित्व पर टिकी है। पार्टी का ढांचा संस्थागत कम, परिवार और करीबी नेताओं के इर्द-गिर्द ज्यादा केंद्रित है। अभिषेक बनर्जी के बढ़ते कद ने भी पुराने नेताओं में असहजता पैदा की है। जब कोई संगठन एक व्यक्ति पर निर्भर हो जाता है, तो उस व्यक्ति की उम्र, स्वास्थ्य और राजनीतिक रणनीति ही पार्टी का भविष्य तय करने लगती है। फिलहाल ताजा खबर यह है कि टीएमसी एक और बड़ी टूट की कगार पर खड़ी है और यह निश्चित हो गया है कि विधानसभा चुनाव में हार के बाद अब टीएमसी को उभरने का मौका शायद ही मिल सके। कल सोमवार को नई दिल्ली में इंडिया गठबंधन की बैठक में ममता बनर्जी उपस्थित नज़र आईं तो वहीं दावा है कि उनकी पार्टी के 20 सांसदो ने बगावत कर दी है। सूचना है कि पार्टी के कई सांसद भाजपा नेताओं से मिलकर बगावत की रणनीति बना रहे थे। केन्द्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव के घर पर सोमवार को ही टीएमसी के कई सांसदों ने मुलाकात के बाद अलग गुट बनाने का दावा किया है। पता चला है कि इस बैठक में टीएमसी के पांच सांसद मौजूद रहे। इनमें शर्मिला सरकार, प्रसून बनर्जी, जगदीश बसुनिया, कालिपद सोरेन व अनूप चक्रवर्ती शामिल हैं। टीएमसी के लोकसभा में 28 व राज्यसभा में 12 सांसद हैं। सूत्र बताते हैं कि बागी सांसदों ने रविवार को एक बैठक की थी, और उसी वक्त अलग गुट बनाने का ऐलान कर टीएमसी को झटका दिया जाने पर विचार हुआ है। जब विधायक दल में टूट हुई थी तो सांसदों के बग़ावत की चर्चाओं ने तूल पकड़ लिया था। ऐसा बताया जा रहा है कि बाग़ी सांसद मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के भी संपर्क में हैं और बहुत ही जल्द एक नये गुट का ऐलान हो सकता है। टीएमसी की सांसद काकोली घोष ने दावा किया है कि बागी सांसदों ने एनडीए का समर्थन करने का फैसला किया है और लोकसभा स्पीकर को अपने फैसले से अवगत करा दिया है। कोई भी पार्टी जब चुनाव हारती है तब उसके सामने सबसे बड़ी चुनौती होती है अपनी पार्टी को टूट से बचाने की क्यों कि हर कोई सत्ता के लड्डू खाना चाहता है, बेकार में विपक्ष में अब कोई बैठना नहीं चाहता है। इसके लिए केंद्र में कांग्रेस में टूट, दिल्ली में आप में टूट उत्तर प्रदेश में सपा में टूट और महाराष्ट्र का उदाहरण देखा जा सकता है। यही संकट अब इस समय टीएमसी के ऊपर मंडरा रहा है। अब देखना यह है कि ममता बनर्जी अपनी पार्टी को टूटने से कितना बचा पातीं हैं।

स्वाधीनता संग्राम में अमर नाम है राम प्रसाद बिस्मिल का

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में वैचारिक चेतना और सशस्त्र क्रांति का एक ऐसा अनूठा संगम देखने को मिलता है जिसने दमनकारी ब्रिटिश सत्ता की नींव हिलाकर रख दी थी। इस अद्वितीय संगम के सबसे प्रखर प्रतीक पुरुष थे अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल। वे केवल एक निर्भीक सेनानी ही नहीं थे बल्कि एक संवेदनशील कवि, लेखक, अनुवादक और बहुभाषाविद भी थे। उनकी कलम से निकले शब्द जहाँ युवाओं के भीतर देशभक्ति की ज्वाला धधका देते थे, वहीं उनके हाथों में थमी पिस्तौल विदेशी शासकों के मन में भय का संचार करती थी। कलम और पिस्तौल का ऐसा अद्भुत संतुलन इतिहास में विरला ही देखने को मिलता है। उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति हंसते-हंसते दे दी और आने वाली पीढ़ियों के लिए राष्ट्रवाद का एक ऐसा अनुपम आदर्श स्थापित किया जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

इस महान क्रांतिकारी का जन्म 11 जून 1897 को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर नामक नगर में हुआ था। उनके पिता मुरलीधर एक साधारण और स्वाभिमानी व्यक्ति थे जबकि उनकी माता मूलमती धार्मिक और दृढ़ संकल्प वाली महिला थीं। बिस्मिल के व्यक्तित्व के निर्माण में उनकी माता का प्रभाव सबसे गहरा था जिन्होंने उन्हें सदा सत्य और देशप्रेम के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। बचपन में उनकी शिक्षा-दीक्षा स्थानीय स्तर पर हुई जहाँ उन्होंने हिंदी, उर्दू और संस्कृत भाषाओं का गहन अध्ययन किया। वे उर्दू में बिस्मिल उपनाम से कविताएँ लिखते थे जबकि हिंदी में राम और अज्ञात के नाम से उनकी रचनाएँ प्रकाशित होती थीं। किशोरावस्था में स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों और आर्य समाज के सिद्धांतों ने उनके जीवन को एक नई दिशा दी जिससे उनके भीतर अनुशासन और राष्ट्र सेवा का संकल्प और अधिक सुदृढ़ हो गया।

देश की पराधीनता और देशवासियों पर होने वाले अत्याचारों ने उन्हें सक्रिय क्रांति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए विवश कर दिया। वर्ष 1918 में उन्होंने मैनपुरी षड्यंत्र के माध्यम से ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी जहाँ उन्होंने युवाओं का एक दल बनाकर देशभक्ति साहित्य का वितरण किया। इसके बाद वे स्वतंत्रता आंदोलन को एक अधिक संगठित और राष्ट्रव्यापी रूप देने के प्रयास में जुट गए। इसी उद्देश्य से उन्होंने अन्य क्रांतिकारियों के साथ मिलकर हिंदुस्तान गणतंत्र संघ नामक एक शक्तिशाली क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की। इस संगठन का मुख्य लक्ष्य भारत को पूर्ण स्वतंत्रता दिलाना और एक लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना करना था। बिस्मिल इस संगठन के मुख्य रणनीतिकार और सेनापति थे। उनके नेतृत्व में चंद्रशेखर आज़ाद और अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ जैसे महान क्रांतिकारियों ने अपनी देशभक्ति का पाठ सीखा।

क्रांतिकारी गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने और अस्त्र-शस्त्र खरीदने के लिए धन की अत्यधिक आवश्यकता थी। विदेशी सरकार से धन मांगना असंभव था और देश की गरीब जनता को लूटना क्रांतिकारियों के सिद्धांतों के विरुद्ध था। इसलिए बिस्मिल ने अंग्रेजी सरकार का खजाना लूटने की एक अत्यंत साहसिक योजना बनाई। 9 अगस्त 1925 को उनके कुशल नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने लखनऊ के समीप काकोरी नामक स्थान पर सहारनपुर से लखनऊ जा रही एक यात्री रेलगाड़ी को रोककर सरकारी खजाने को अपने नियंत्रण में ले लिया। इस ऐतिहासिक घटना को काकोरी कांड के नाम से जाना जाता है। इस घटना ने ब्रिटिश साम्राज्य को भीतर तक झकझोर दिया और सरकार ने क्रांतिकारियों को पकड़ने के लिए अपनी पूरी शक्ति झोंक दी। व्यापक धरपकड़ के बाद बिस्मिल सहित कई प्रमुख क्रांतिकारियों को बंदी बना लिया गया।

कारागार की चारदीवारों के भीतर भी बिस्मिल का हौसला तनिक भी कम नहीं हुआ। उन्होंने बंदीगृह को ही अपनी साधना स्थली बना लिया और वहाँ रहते हुए प्रचुर मात्रा में उत्कृष्ट साहित्य की रचना की। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध आत्मकथा वहीं लिखी जो आज भी भारतीय क्रांतिकारी साहित्य का एक अनमोल रत्न मानी जाती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने कई विदेशी क्रांतिकारी ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद किया और अनेक प्रेरणादायक गीतों की रचना की। कारागार में रहते हुए उन्होंने अपने देशवासियों और विशेष रूप से युवाओं के नाम कई संदेश भेजे जिसमें उन्होंने सांप्रदायिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता बनाए रखने पर बल दिया। उनके विचार अत्यंत दूरदर्शी थे जो केवल अंग्रेजों को भगाने तक सीमित नहीं थे बल्कि वे एक शोषणमुक्त समाज का निर्माण करना चाहते थे।

ब्रिटिश अदालत ने काकोरी घटना का मुख्य सूत्रधार मानते हुए राम प्रसाद बिस्मिल को मृत्युदंड की सजा सुनाई। 19 दिसंबर 1927 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर कारागार में उन्हें फांसी के फंदे पर लटका दिया गया। फांसी के चबूतरे की ओर बढ़ते हुए उनके चेहरे पर कोई भय नहीं था बल्कि एक अलौकिक तेज था। उन्होंने हंसते हुए फंदे को चूमा और अपनी मातृभूमि की वंदना करते हुए प्राण त्याग दिए। उनकी अंतिम इच्छा यही थी कि वे बार-बार भारत भूमि पर जन्म लें और तब तक देश की सेवा करते रहें जब तक कि वह पूरी तरह से स्वतंत्र न हो जाए। उनका यह सर्वोच्च बलिदान व्यर्थ नहीं गया और इसने पूरे देश में क्रांति की एक ऐसी लहर पैदा कर दी जिसने अंततः 15 अगस्त 1947 को भारत को औपनिवेशिक दासता से मुक्ति दिलाई।

राम प्रसाद बिस्मिल का जीवन और उनका कृतित्व इस बात का साक्षात प्रमाण है कि एक सच्चा देशभक्त केवल अस्त्रों से ही नहीं बल्कि अपने विचारों और नैतिक मूल्यों से भी लड़ता है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करना चाहिए। आज भले ही वे हमारे बीच भौतिक रूप से उपस्थित नहीं हैं लेकिन उनकी कविताएँ, उनके विचार और उनका अदम्य साहस हर भारतीय के हृदय में सदैव जीवित रहेगा। राष्ट्र निर्माण और देश की संप्रभुता की रक्षा के लिए उनका जीवन सदैव एक मार्गदर्शक प्रकाश स्तंभ की भांति हमें प्रेरणा देता रहेगा।

महेन्द्र तिवारी

महानता के शिखर पर आरोहण

> समस्याएं हर व्यक्ति के जीवन में आती है किंतु महान वही होता है जो प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने मन को कमजोर नहीं करता। वह जो समता में उपस्थित होता हैं उसके संकल्प- विकल्प और दुःख का नाश हो जाता हैं। सदियों पहले भगवान् महावीर जन्मे थें। वे जन्म से महावीर नही थे। उन्होंने जीवन भर अनगिनत संघर्षो को झेला, कष्टों को सहा, दुखःसे सुख खोजा और गहन तप एवं साधना के बल पर सत्य तक पहुंचे वे हमारे लिए आदर्श की ऊंची मीनार बन गए। उन्होंने समझ दी की महानता कभी भौतिक पदार्थो,सुख-सुविधाओं,संकीर्ण सोच एवं स्वार्थी मनोवृत्ति से नही प्राप्त की जा सकती हैं। उसके लिए सच्चाई को बटोरना होता हैं, नैतिकता के पथ पर चलना होता हैं और अहिंसा की जीवन शैली अपनानी होती हैं। श्रेष्ठता का आधार कोई ऊंचे आसन पर बैठना नही होता हैं। श्रेष्ठता का आधार हमारी ऊंची सोच पर निर्भर करता है। हम कितनी ही आधुनिक शिक्षा प्राप्त कर ले किंतु जब तक सोच ऊंची एवं व्यावहारिक अनुभव अद्धभूत नही रहेगा हम में कोई ना कोई कमी रहती रहेगी। यह बात सुनी हुई हैं पर आज भी आचरण करने योग्य हैं। स्वर्ग पाना है या सच्चा सुख अपनी सोच को शिखर तक ले जाओ की उसके आगे सितारे भी झुक जाए । वह अपने सफ़र को किसी कश्ती का मोहताज न बनाओ । इस शान से चलों की तूफ़ान भी झुक जाए। वह फिर देखो कमाल इसलिए सोच ऊंची रखे। जीवन का सबसे बडा गुरु वक्त होता है क्योंकि जो वक्त सिखाता है वो कोई नहीं सीखा सकता ।धन-वैभव आदि जीवन में कभी आदर सम्मान का मापदण्ड नहीं होता है। प्रतिष्ठा का मापदण्ड गुण सम्पदा की सम्पन्नता है। यथा मधुर व्यवहार, शालीन आचार, अनुशासनप्रियता, सेवा-भावना, मिलनसारिता , सादगीपूर्ण अहं रहित जीवन, आध्यात्मिक स्वाध्याय प्रियता, व्यवहारकुशलता आदि-आदि ही तो उच्चता की गुणवत्ता हैं। केवल रुपयों-पैसों व धन-वैभव की सम्पन्नता में तो अहं का बहुत बड़ा दोष देखा जाता है जो मन में बात-बात में रोष ला देता है। ऐसा व्यक्ति कभी भी सबकी दृष्टि में आदरास्पद नहीं हो सकता। वह चाहे कितना ही वैभव संपन्न हो। इस दृष्टि से वह सदा विपन्न ही रहेगा। हमें दुःखों का नाश करना है तो समता का आश्रय लेना पड़ेगा। समता का आश्रय लेने का मतलब हैं अनुकूलता के प्रसंग में खुशी न मनाना और प्रतिकूलता के प्रसंग में दुःखी न बनना। महानता की निशानी सहजता में है। हमने ही अपने जीवन को कठिनता में धकेल दिया है। हमने अपना ध्येय जहाँ यह पाना वह बनना बना लिया है। हमारे द्वारा अपनी लायकियत सिद्ध करना उचित शिखर पर पहुंचना जीवन के अवश्यमेव आदि बन गए हैं। पर सच यह हैं कि वास्तव में जो महान है वह तो प्राकृतिक रूप से ही सहज- सरल आदि है। जल की तरह तरल, फूल की तरह कोमल, सांस की तरह नेचुरल आदि हैं। वह जो जितने सहज होते हैं उनमें उतनी ही गहराई पाई जाती है। उनमें ही ये सब गुण खिलते हैं जैसे निष्कपटता, साधुता, व्यवहार सौंदर्य और सच्चाई आदि- आदि। उनके लिए असहज कुछ होता ही नहीं सब सहज, सरल जीवन का हिस्सा ही हो जाता है। हम ही हैं जो अपने मिथ्या दंभ में जीवन में जटिलताएं ले आते है। सहज रूप से जीवन चलाएं तो वह तो सरलता का संजीवन होता ही है। हमारा यह जीवन समता का राजपथ हैं। इस पर हमको चलना होगा। यह हम मानव की कमजोरी हैं कि समस्या को देख उससे दुःखी बन जाते हैं। समस्या अलग चीज हैं , दुःखी होना अलग बात हैं। हालांकि दोनों का संबंध हैं परन्तु समस्या आने पर दुःखी होना कोई आवश्यक नहीं हैं। किसके जीवन में समस्याएं नहीं आती हैं? बड़े- बड़े महापुरुषों के जीवन में भी समस्याएं आती हैं। हम भगवान् महावीर को देखें, गौतम बुद्ध को देखें, राम को देखें, कठिनाइयां तो जीवन में आई हैं। परन्तु महापुरुष वह हैं जो कठिनाईयों के आने पर भी शांत रहता हैं, दुःखी नहीं बनता हैं। विचारों का अनियन्त्रित प्रवाह हमें जीवन में भटकाता है जबकि उन पर नियंत्रण हमें परिष्कार की राह दिखाता है। चिंतन की निर्विचार अवस्था एक महान शक्ति का परिचायक है, इसी दिशा में निर्बाध रूप से अग्रसर होना चरम व सिद्ध अवस्था का दायक है। वह अपने मन को प्रशिक्षित कर रखता हैं कि मुझे दुःखी नहीं बनना हैं। ऐसे व्यक्ति महानता के शिखर पर आरोहरण कर सकता हैं।

प्रदीप छाजेड़

दैनिक राशिफल

मेष आज कार्यक्षेत्र में नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं। आत्मविश्वास बढ़ेगा और रुके हुए कार्य पूरे होंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार के संकेत हैं। परिवार का सहयोग मिलेगा।

वृषभ धैर्य और समझदारी से काम लेने का दिन है। किसी पुराने मित्र से मुलाकात हो सकती है। धन संबंधी मामलों में सावधानी रखें। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

मिथुन करियर में प्रगति के अवसर प्राप्त होंगे। विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है। यात्रा के योग बन रहे हैं। दांपत्य जीवन में मधुरता रहेगी।

कर्क भावनाओं पर नियंत्रण रखें। कार्यस्थल पर मेहनत का अच्छा परिणाम मिलेगा। परिवार के साथ समय बिताने का अवसर मिलेगा। खर्चों पर नियंत्रण रखें।

सिंह मान-सम्मान में वृद्धि होगी। व्यापारियों को लाभ मिलने के संकेत हैं। किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से संपर्क लाभदायक रहेगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

कन्या नई योजनाओं पर काम शुरू कर सकते हैं। नौकरी में अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। आर्थिक मामलों में सफलता मिलेगी। विद्यार्थियों के लिए दिन शुभ है।

तुला भाग्य का साथ मिलेगा। लंबे समय से रुका हुआ कार्य पूरा हो सकता है। पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा। निवेश सोच-समझकर करें।

वृश्चिक कार्यस्थल पर चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन सफलता मिलेगी। धन लाभ के योग हैं। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न करें।

धनु नई संभावनाएं सामने आएंगी। नौकरी और व्यवसाय में उन्नति के संकेत हैं। परिवार में खुशी का माहौल रहेगा। यात्रा लाभदायक हो सकती है।

मकर मेहनत का पूरा फल मिलेगा। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। किसी शुभ समाचार की प्राप्ति हो सकती है। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा।

कुंभ रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। मित्रों का सहयोग मिलेगा। करियर में नई उपलब्धियां हासिल हो सकती हैं। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

मीन आज का दिन सकारात्मक रहेगा। नौकरी और व्यवसाय में लाभ के योग हैं। पारिवारिक संबंध मजबूत होंगे। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी।

जंग का चक्रव्यूह: प्रवेश आसान, बाहर निकलना मुश्किल

महाभारत का वह प्रसंग सभी भारतीय को याद होगा जिसमें युवा अभिमन्यु ने कहा था कि उन्हें चक्रव्यूह में प्रवेश करना तो आता है, लेकिन उससे बाहर निकलने का मार्ग वे नहीं जानते। आज का वैश्विक परिदृश्य भी इसी कड़वी सच्चाई से जूझ रहा है। 21वीं सदी के आधुनिक दौर में कुछ राष्ट्र और उनके सर्वोच्च नेता राजनीतिक, भौगोलिक और रणनीतिक महत्वाकांक्षाओं के वशीभूत होकर युद्ध के मैदान में उतर तो जाते हैं, लेकिन कुछ ही समय में वे खुद को एक ऐसे अंतहीन दलदल में पाते हैं जहां से गरिमा के साथ कदम पीछे खींचना नामुमकिन नहीं तो मुश्किल अवश्य हो जाता है। हालिया वैश्विक घटनाओं ने यह साबित कर दिया है कि आधुनिक तकनीक और सैन्य श्रेष्ठता के बावजूद, युद्ध को शुरू करना जितना सरल है, उसे समेटना उतना ही पेचीदा और अनिश्चित है।

इतिहास गवाह है कि युद्ध की चिनगारी सुलगाने वाले अक्सर इस मुगालते में रहते हैं कि वे मकसद पूरा होने पर अपनी शर्तों पर और अपनी मर्जी के समय पर इसे खत्म कर लेंगे। लेकिन असलियत इसके ठीक उलट रही है। वियतनाम युद्ध इसका एक बड़ा ऐतिहासिक प्रमाण है, जहाँ दुनिया की सबसे बड़ी महाशक्ति अमेरिका एक कम्युनिस्ट सरकार को हटाने के उद्देश्य से उतरी थी। लगभग 20 साल (1955 से 1975) तक खिंचे इस युद्ध में अमेरिका ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी, लेकिन अंततः 50,000 से अधिक अमेरिकी सैनिकों की जान गंवाने और देश के भीतर भारी जन-आक्रोश झेलने के बाद अमेरिका को वहां से मजबूरन पैर खींचने पड़े। ठीक ऐसा ही भंवर सोवियत संघ के लिए 1979 में अफगानिस्तान में बना, जिसने सोवियत अर्थव्यवस्था और रूतबे को इस कदर खोखला कर दिया कि अंततः उसका विघटन ही हो गया।

इस 'अफगान जाल' की कड़वाहट से इतिहास ने कोई सबक नहीं सीखा। साल 2001 में 9/11 के आतंकी हमलों के बाद अमेरिका उसी अफगानिस्तान में आतंकवाद को खत्म करने और एक त्वरित जीत के भरोसे दाखिल हुआ। तत्कालीन रक्षा सचिव ने तो कुछ ही महीनों में युद्ध खत्म होने की घोषणा भी कर दी थी। लेकिन यह अमेरिकी इतिहास का सबसे लंबा युद्ध (लगभग 19 साल 10 महीने) बन गया। अंततः अगस्त 2021 में, अरबों डॉलर फूंकने और हजारों जान गंवाने के बाद, अमेरिका को बेहद अफरातफरी और अपमानजनक स्थिति में अपना युद्धक समान छोड़कर वहां से निकलना पड़ा, और अफगानिस्तान वापस उसी तालिबान के हाथ में चला गया जिसे हटाने अमेरिका आया था।

यह 'क्विक विक्ट्री' यानी त्वरित जीत का भ्रम आज के दौर में भी साफ देखा जा सकता है। जब फरवरी 2022 में रूस ने यूक्रेन पर आक्रमण किया, तो मॉस्को का आकलन था कि यह कुछ दिनों या हफ्तों का एक सीमित सैन्य अभियान होगा। लेकिन आज सालों बाद भी यह युद्ध एक अंतहीन गतिरोध में बदल चुका है, जहाँ दोनों पक्षों को भारी जन-धन की हानि हो चुकी है, पर राजनीतिक मजबूरियों के कारण कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं है।

ठीक इसी तरह, ईरान और इजरायल-अमेरिका के बीच भड़के सीधे सैन्य टकराव को भी रणनीतिकारों ने एक 'सीमित और त्वरित' कार्रवाई माना था। धारणा यह थी कि सटीक हवाई हमलों से ईरान को झुका दिया जाएगा, वहां सत्ता परिवर्तन कर दिया जाएगा परंतु इसके जवाब में उपजे क्षेत्रीय संकट, होर्मुज जलडमरूमध्य की नाकेबंदी और छद्म युद्धों के विस्तार ने महाशक्तियों को एक नए रणनीतिक भंवर में फंसा दिया है।

इस वैश्विक चक्रव्यूह के पीछे कई गहरे कारण काम करते हैं। पहला है 'संक कॉस्ट फैलेसी' यानी प्रतिष्ठा का दांव, अर्थात जब सैकड़ों सैनिकों की जान चली जाती है और अरबों डॉलर खर्च हो जाते हैं, तो बिना किसी ठोस 'जीत' के पीछे हटना किसी भी राष्ट्रध्यक्ष के लिए राजनीतिक आत्महत्या जैसा हो जाता है। दूसरा कारण है युद्ध का वैश्वीकरण, मतलब

आधुनिक दौर की जंगें केवल दो देशों के बीच नहीं रह जातीं, उनमें स्थानीय मिलिशिया, हथियार आपूर्तिकर्ता और वैश्विक गठबंधन शामिल हो जाते हैं, जिससे युद्ध की कमान मूल देशों के हाथ से निकल जाती है। इसके अलावा, आर्थिक आत्मघात भी इसका एक बड़ा पहलू है, जहाँ प्रतिबंधों और आपूर्ति श्रृंखला टूटने के कारण वैश्विक ईंधन और खाद्यान्न संकट पैदा होता है, जिससे युद्ध शुरू करने वाले देशों की अपनी अर्थव्यवस्था भी इसकी जद में आ जाती है।

आज का वैश्विक परिदृश्य यह गंभीर चेतावनी देता है कि आधुनिक हथियारों से युद्ध की शुरुआत तो की जा सकती है, लेकिन उसका अंत कभी भी उनके नियंत्रण में नहीं होता। वियतनाम से लेकर अफगानिस्तान और यूक्रेन से लेकर ईरान तक के उदाहरण यह चीख-चीख कर कह रहे हैं कि ताकत के बल पर जंग का फैसला जल्द नहीं किया जा सकता। युद्ध में उतरने से पहले 'एक्जिट स्ट्रेटेजी' यानी बाहर निकलने के सुरक्षित रास्ते का न होना ही इस सदी का सबसे खतरनाक चक्रव्यूह है, और जब तक वैश्विक नेतृत्व इस सच को स्वीकार नहीं करेगा, तब तक शांति केवल एक कागजी शब्द बनी रहेगी।

लेखक: प्रो. (डा.) मनमोहन प्रकाश

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रवि कुमार अवस्थी द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला विजय लक्ष्मी नगर परगना खैराबाद तहसील व जनपद -सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, हीवेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में छपे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। नोट:-उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादो का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.N.I NO. UPHIN/2009/34814 मो0 नं0 -9511151254,E-Mail :- news@swatantraprabhat .com

संक्षिप्त खबरें

दहेज में कार न मिलने पर नवविवाहिता की हत्या का आरोप

पति, देवर और सास समेत पांच पर लगाया हत्या का आरोप

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के खजूर गांव में सोमवार को हुई विवाहिता की मौत के मामले में मृतका के पिता ने पुलिस को तहरीर दी है। उन्होंने दहेज में चारपहिया वाहन की मांग पूरी न होने पर बेटी की हत्या किए जाने का आरोप लगाया है। डलमऊ थाना क्षेत्र के पूरे तिलंगा मजरे जोहवा नटकी गांव निवासी रमेश कुमार यादव ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उन्होंने अपनी पुत्री प्रिया (23) की शादी 2 मार्च 2025 को खजूर गांव निवासी रामकृष्ण के साथ की थी। शादी में दो लाख रुपये नगद और गृहस्थी का सामान दिया था। आरोप है कि विवाह के बाद से ही ससुरालीजन दहेज से संतुष्ट नहीं थे। वे चारपहिया वाहन की मांग को लेकर प्रिया का मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न करते थे। रमेश कुमार ने आरोप लगाया कि उनकी पुत्री की मौत के लिए पति रामकृष्ण, देवर, सास और उसकी ननदे जिम्मेदार हैं। पीड़ित पिता के अनुसार सोमवार शाम करीब 5:30 बजे उन्हें घटना की सूचना मिली। जब वह खजूरगांव पहुंचे तो प्रिया का शव घर के अंदर बेड पर पड़ा मिला। इसके बाद उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। परिजनों का दावा है कि मौत कई घंटे पहले हो चुकी थी। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि तहरीर मिली है। तहरीर के आधार पर केस दर्ज किया जाएगा।

यूपी में खेल परियोजनाओं में देरी बर्दाश्त नहीं, गुणवत्ता की हर माह होगी जांच

लखनऊ। प्रदेश में खेल विभाग की निर्माणाधीन परियोजनाओं में देरी और गुणवत्ता से समझौता अब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। खेल एवं युवा कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गिरीश चंद्र यादव ने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि सभी खेल अवस्थापनाओं का निर्माण स्वीकृत लागत, निर्धारित मानकों और तय समय सीमा के भीतर पूरा कराया जाए। किसी भी स्तर पर लापरवाही मिलने पर संबंधित अधिकारियों की जवाबदेही तय की जाएगी। विधान भवन स्थित कार्यालय कक्ष से आयोजित वर्चुअल समीक्षा बैठक में मंत्री ने कहा कि निर्माण कार्यों की गुणवत्ता की जांच जिलाधिकारी की अध्यक्षता में गठित समिति से कराई जाए। समिति हर माह निरीक्षण कर अपनी रिपोर्ट खेल निदेशालय को भेजेगी। यदि निर्माण कार्य मानकों के अनुरूप नहीं पाए गए तो संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने मंडल और जिला स्तरीय अधिकारियों को निर्माण स्थलों का नियमित निरीक्षण करने के निर्देश दिए। जिन जिलों में खेल अवस्थापनाओं का निर्माण पूरा हो चुका है, वहां गुणवत्ता जांच के बाद नियमानुसार उनका हस्तांतरण कराया जाए, ताकि शीघ्र लोकार्पण की तिथि निर्धारित की जा सके। बैठक में खेल सचिव सुहास एलवाई ने सभी परियोजनाओं का विवरण सीएमआइएस पोर्टल पर नियमित रूप से अपडेट करने के भी निर्देश दिए।

नाबालिक किशोरी को भगाने का आरोप

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के एक गांव के रहने वाले एक व्यक्ति ने एक युवक पर उसकी नाबालिक बेटी को बहला फुसला कर भगा ले जाने का आरोप लगाया। पिता की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी के विरुद्ध तक केस दर्ज कर किशोरी की तलाश शुरू कर दी है। गांव निवासी व्यक्ति ने बताया कि तीन जून की दोपहर करीब 12 बजे फतेहपुर जनपद के हुसैनगंज फुटहाबाद का रहने वाला संतोष उसकी बेटी को कहीं भगा ले गया। काफी खोजबीन की लेकिन बिटिया का कुछ पता नहीं चल सका। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि मामले में केस दर्ज कर किशोरी की तलाश की जा रही है।

पुलिस के लगातार असहयोग के बाद आज लगभग 1:30 बजे माफियाओं से कब्जा मुक्त हुआ

● विद्या मंदिर गर्ल्स हाई स्कूल, नरही

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के प्रादेशिक उपाध्यक्ष एवं उपभोक्ता डा.आर.पी. मिश्र एवं जिलाध्यक्ष अनिल शर्मा ने बताया की एडीएम (नगर पूर्वी) के दिनांक 8 जून 2026 को विद्यालय को तत्काल खाली कराए जाने के आदेश के बावजूद पुलिस प्रशासन द्वारा लगातार असहयोग किया गया। पुलिस प्रशासन द्वारा पहले यह कहकर कब्जा नहीं दिलाया गया कि फोर्स के लिए निर्धारित शुल्क जमा किया जाना है जबकि उनसे कहा गया था कि लखनऊ इंटर कॉलेज के प्रकरण में एसीएम के आदेश के बाद वहां का ताला स्वयं पुलिस ने खुलवाया था और कोई शुल्क जमा नहीं किया गया था। आज उसी पुलिस ने कहा कि सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालय से फोर्स के लिए कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। यह विलम्ब इसलिए किया गया था क्योंकि विपक्षी को माननीय उच्च न्यायालय जाने का मौका मिल जाए। विपक्षी द्वारा माननीय उच्च न्यायालय में याचिका दाखिल की गई किन्तु उनके पक्ष में कोई आदेश नहीं हुआ और आज का सुनवाई के लिए अगले सोमवार को लगा दी गई। ताला खुलवाने के लिए पहले पुलिस ने विद्यालय प्रबंधन को प्रातः 10:00 बजे का समय दिया था इसी के चलते प्रादेशिक उपाध्यक्ष डा. आर.पी. मिश्र, जिलाध्यक्ष अनिल शर्मा, विद्यालय की प्रबंधिका सहित प्रबंध समिति के पदाधिकारी/सदस्यगण तथा अभिभावक गण पहुंच गए थे किंतु टालते टालते लगभग 1:30 बजे पुलिस बल विद्यालय पहुंचा और उसके बाद ताला खुलवाकर कार्यवाही की गई। प्रादेशिक उपाध्यक्ष डा. आर.पी. मिश्र और जिलाध्यक्ष अनिल शर्मा ने संपूर्ण प्रकरण में लखनऊ के मीडिया के सहयोग को धन्यवाद देते हुए कहा कि उनकी आवाज ने केंद्र सरकार तक को हिला दिया और इसीलिए केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश से विद्या मंदिर गर्ल्स हाई स्कूल नरही के प्रकरण के संबंध में आख्या मांगी गई है।

लखनऊ : पुलिस भर्ती एग्जाम के अंतिम दिन भीड़ बढ़ी तो रेलवे ने दौड़ाई स्पेशल ट्रेन, गोरखपुर के लिए भी चलाई दो रेल

लखनऊ। पुलिस भर्ती परीक्षा के अंतिम दिन बुधवार को परीक्षार्थियों की भीड़ एकाएक लखनऊ स्टेशन पर एकत्र हो गई। रेलवे ने परीक्षार्थियों के लिए झांसी रूट पर एक स्पेशल ट्रेन दौड़ा दी। वहीं, लखनऊ जंक्शन से गोरखपुर के लिए दो परीक्षा स्पेशल ट्रेनें रवाना की गई। पुलिस भर्ती की लिखित परीक्षा लखनऊ के 55 केंद्रों पर सोमवार से आरंभ हुई थी। प्रतिदिन दो पालियों में शामिल होने के लिए 1.35 लाख अभ्यर्थियों को प्रवेश पत्र जारी किया गया था। परीक्षार्थियों के लिए आरपीएफ, जीआरपी के साथ जिला प्रशासन ने भी तैयारियां की थी। लखनऊ स्टेशन के बाहर परीक्षार्थियों के लिए होल्डिंग एरिया बनाया गया। यहां परीक्षार्थियों को रोकने के बाद प्लेटफार्मों पर उनकी ट्रेनों के समय के अनुसार भेजा गया। हालांकि इस बीच कई परीक्षार्थी पहले ही प्लेटफार्मों और पैदल पुल पर पहुंच गए। एसपी रेलवे रोहित मिश्र और वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त देवांश शुक्ल ने सुरक्षा बल के साथ स्थिति को नियंत्रित किया। भीड़ की जानकारी जुटाकर रेलवे ने शाम 5:45 बजे झांसी की ओर एक स्पेशल ट्रेन को रवाना किया।

ग्राम रोजगार सेवकों की बैठक में संगठन विस्तार और आगामी कार्यक्रमों पर चर्चा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में ग्राम रोजगार सेवक (पंचायत मित्र) वेलफेयर एसोसिएशन, उत्तर प्रदेश की एक महत्वपूर्ण बैठक मंगलवार को लखनऊ स्थित पुलिस महानिदेशक कार्यालय के पास आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष कुलदीप त्रिवेदी ने की। बैठक में प्रदेश महासचिव राजवीर सिंह द्वारा संगठन की वर्तमान गतिविधियों और भविष्य की रणनीतियों पर विस्तार से चर्चा की गई। उन्होंने संगठन को मजबूत बनाने तथा ग्राम रोजगार सेवकों की समस्याओं के समाधान के लिए एकजुट होकर कार्य करने का आह्वान किया। इस दौरान कई पदाधिकारियों ने अपने विचार रखते हुए संगठन की मजबूती और कर्मचारियों के हितों की रक्षा के लिए सुझाव दिए।

प्रदेश प्रभारी आकाश त्रिपाठी ने संगठन की आगामी कार्ययोजनाओं की जानकारी देते हुए बताया कि 15 जून 2026 को जिला स्तरीय कार्यक्रम तथा 1 जुलाई 2026 को मानदेय, आवास और अन्य लंबित मांगों को लेकर व्यापक अभियान चलाया जाएगा। उन्होंने सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों से कार्यक्रमों को सफल बनाने की अपील की। बैठक में संगठन के विस्तार, सदस्यता अभियान तथा ग्राम रोजगार सेवकों की विभिन्न समस्याओं के समाधान को लेकर भी चर्चा की गई। उपस्थित पदाधिकारियों ने संगठन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए आगामी कार्यक्रमों को सफल बनाने का संकल्प लिया। बैठक में मुख्य रूप से आदित्य सिंह चौहान, ललितेश शास्त्री, दीपक चौबे, रामलखन तिवारी, आर.के. यादव, रूपेश यादव, पंकज मिश्रा तथा इंद्र सिंह यादव सहित अनेक पदाधिकारी एवं सदस्य मौजूद रहे।

सेमरी कताई मिल्स में आखिर मलबा बिक रहा है या मिट्टी स्थानीय लोगों ने उठाए सवाल, जांच कराएं जाने कि मांग

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महमूदाबाद, सीतापुर महमूदाबाद क्षेत्र स्थित सेमरी कताई मिल्स परिसर में कथित रूप से मलबे की आड़ में बड़े पैमाने पर मिट्टी की बिक्री किए जाने के आरोप सामने आए हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि पिछले कई महीनों से यहां मलबा हटाने के नाम पर मिट्टी का खनन और परिवहन किया जा रहा है, जबकि वास्तविक मलबे की मात्रा बेहद कम दिखाई दे रही है। क्षेत्रीय नागरिकों का आरोप है कि मिल परिसर से प्रतिदिन बड़ी संख्या में ट्रैक्टर-ट्रॉलियों के माध्यम से मिट्टी बाहर भेजी जा रही है। उनका कहना है कि यदि प्रशासन द्वारा इसकी निष्पक्ष जांच कराई जाए तो पूरे मामले की वास्तविकता सामने आ सकती है। स्थानीय लोगों ने यह भी बताया कि सड़क किनारे खुलेआम मिट्टी से भरी जा रही ट्रैक्टर-ट्रॉलियों के कारण उड़ने वाली धूल से राहगीरों, दुकानदारों और आसपास रहने वाले लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। धूल के कारण लोगों को सांस लेने में दिक्कत होने के साथ-साथ सड़क पर दृश्यता प्रभावित होने से दुर्घटनाओं की आशंका भी बनी रहती है। नागरिकों का कहना है कि संबंधित विभागों को इस मामले का संज्ञान लेकर यह स्पष्ट करना चाहिए कि सेमरी कताई मिल्स परिसर से वास्तव में मलबे का निस्तारण किया जा रहा है या फिर मिट्टी की बिक्री की जा रही है। साथ ही, परिवहन कार्य के दौरान सुरक्षा मानकों का पालन सुनिश्चित किया जाए, ताकि आमजन को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

फिलहाल, स्थानीय लोगों की मांग है कि प्रशासन पूरे प्रकरण की जांच कराए और यदि किसी प्रकार की अनियमितता पाई जाती है तो नियमानुसार कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

अखिलेश यादव ने की जोरदार तैयारी, भाजपा के हिंदुत्व वाले दांव की धार कुंद करने में जुटे सपा प्रमुख

लखनऊ। समाजवादी पार्टी हिंदुत्व के मैदान में खुलकर चुनावी दांव देखने वाली भाजपा को इस बार सनातन के सम्मान के नाम पर ही चुनौती देने की कोशिश में है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव हिंदुत्व के मुद्दे पर सधी रणनीति के साथ आगे बढ़ते दिखाई दे रहे हैं। महाकुंभ 2025 में बड़ी अव्यवस्थाओं व जनहानि से लेकर वाराणसी के मणिकर्णिका घाट प्रकरण और प्रयागराज में स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद मामले में मुखर होने के बाद अब सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने अयोध्या के श्रीराम मंदिर के दानराशि गबन प्रकरण पर मोर्चा खोला हैं। सपा प्रमुख की कोशिश है कि भाजपा के हिंदुत्व एजेंडे का प्रत्यक्ष विरोध करने के बजाय उसे सनातन सम्मान के नाम पर चुनौती दी जा सके। राम मंदिर के मुद्दे पर भाजपा को असहज किया जा सके और जनता के बीच विमर्श खड़ा किया जाए। राम मंदिर और हिंदुत्व का मुद्दा, भाजपा के लिए लंबे समय से लाभदायक साबित हुआ है। हाल ही में हुए बंगाल चुनाव में भी भाजपा की रिकार्ड जीत में इसी दांव का सबसे बड़ी भूमिका मानी जाती है। उत्तर प्रदेश में वर्ष 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा एक बार फिर वोटों के ध्रुवीकरण की जमीन तैयार करने में जुटी है।

देर रात भटकी 13 वर्षीय बालिका को महमूदाबाद पुलिस ने परिजनों से मिलाया, पिता ने जताया आभार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महमूदाबाद, सीतापुर उत्तर प्रदेश पुलिस की संवेदनशीलता और त्वरित कार्रवाई का एक सराहनीय उदाहरण थाना कोतवाली महमूदाबाद क्षेत्र में देखने को मिला, जहां पुलिस टीम ने देर रात भटकी हुई 13 वर्षीय बालिका को सकुशल खोजकर उसके परिजनों के सुपुर्द कर मानवता और सेवा का परिचय दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार, दिनांक 09 जून 2026 को रात्रि लगभग 11 बजे पुलिस को सूचना मिली कि बस अड्डा चौराहे पर एक नाबालिग बालिका अकेली घूम रही है और लोगों से सहायता मांग रही है, लेकिन उसे कोई मदद नहीं मिल पा रही थी।

सूचना मिलते ही उपनिरीक्षक दीपक राठौर एवं महिला कांस्टेबल रचना तत्काल मौके पर पहुंचे। पुलिस टीम ने बालिका को विश्वास में लेकर प्यार से पूछताछ की, जिस पर उसने अपना नाम रोशनी (13 वर्ष) पुत्री राम नरेश निवासी ग्राम कुस्मौरा, थाना रेउसा, जनपद सीतापुर बताया। घबराहट के कारण वह अपने परिजनों का मोबाइल नंबर बताने में असमर्थ थी।

बालिका की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उसे तत्काल थाना कोतवाली महमूदाबाद लाया गया। पुलिस टीम ने स्थानीय स्तर पर लगातार प्रयास और संपर्क साधकर आखिरकार उसके पिता राम नरेश से संपर्क स्थापित कर लिया। सूचना मिलने पर बालिका के पिता राम नरेश पुत्र भगौती तथा ग्राम प्रधान शिवेन्द्र राही पुत्र देवीदयाल निवासी ग्राम कुस्मौरा, थाना रेउसा थाने पहुंचे। उनकी उपस्थिति में बालिका रोशनी को सकुशल उनके सुपुर्द कर दिया गया। अपनी बेटी को सुरक्षित वापस पाकर पिता की आंखें नम हो गई। उन्होंने तथा ग्राम प्रधान ने सीतापुर पुलिस की त्वरित, मानवीय एवं सराहनीय कार्यशैली की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए धन्यवाद व्यक्त किया। इस सराहनीय कार्य में उपनिरीक्षक दीपक राठौर एवं महिला कांस्टेबल रचना की महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिनकी तत्परता और संवेदनशीलता से एक परिवार को उसकी बिछड़ी हुई बेटी वापस मिल सकी।

मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने सुप्रसिद्ध दानेश्वर धाम मे किया रुद्राभिषेक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

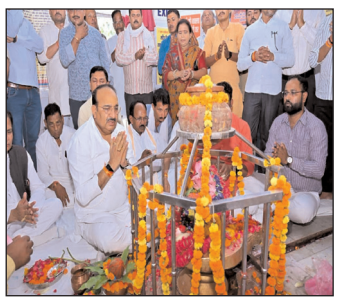

महराजगंज/रायबरेली: प्राचीन एवं पावन शिवधाम दानेश्वर धाम बुधवार को भक्ति, श्रद्धा और आध्यात्मिक ऊर्जा से आलोकित हो उठा। भगवान भोलेनाथ के जयघोष और वैदिक मंत्रोच्चार के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जनसेवा के 4399 दिन पूर्ण होने के अवसर पर राष्ट्र, प्रदेश और जनकल्याण की मंगलकामना के लिए विशेष रुद्राभिषेक एवं पूजन-अर्चन का आयोजन किया गया। आपको बता दें कि, उत्तर प्रदेश सरकार के राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिनेश प्रताप सिंह ने भगवान दानेश्वर महादेव का विधि-विधान से दुग्ध, जल, बेलपत्र एवं पवित्र सामग्री से अभिषेक कर देश की सुख-समृद्धि, अखंडता और नागरिकों के कल्याण की प्रार्थना की। मंदिर परिसर में उपस्थित श्रद्धालुओं ने 'हर-हर महादेव' और 'बम-बम भोले' के उद्घोष के साथ वातावरण को शिवमय बना दिया।

रुद्राभिषेक के दौरान वैदिक आचार्यों द्वारा रुद्र सूक्त एवं शिव स्तुतियों का पाठ किया गया। श्रद्धालुओं का मानना है कि, भगवान शिव का रुद्राभिषेक केवल व्यक्तिगत कल्याण का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्र और समाज के मंगल की कामना का भी सर्वोत्तम आध्यात्मिक अनुष्ठान है। इसी भावना के साथ मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने उपस्थित जनसमूह के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य तथा राष्ट्रसेवा के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिनेश प्रताप सिंह ने महारुद्राभिषेक के उपरांत जनसमूह को संबोधित कहा कि, भगवान भोलेनाथ समस्त सृष्टि के कल्याणकर्ता हैं। उनकी कृपा से ही राष्ट्र उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहता है। उन्होंने कहा कि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत निरंतर प्रगति कर रहा है और आज का यह रुद्राभिषेक राष्ट्र की उन्नति, जनकल्याण तथा विश्व शांति की भावना से समर्पित है। उन्होंने प्रार्थना करी कि, महादेव की कृपा समस्त देशवासियों पर बनी रहे और भारत निरंतर वैभव के शिखर को स्पर्श करता रहे। उन्होंने कहा कि, भारतीय संस्कृति में राष्ट्र सेवा को ईश्वर सेवा के समान माना गया है। प्रधानमंत्री मोदी ने जनसेवा को अपना संकल्प बनाया है। उनके स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन के लिए भगवान शिव से प्रार्थना करना करोड़ों देशवासियों की भावना का प्रतीक है। महादेव की कृपा से भारत विश्वगुरु बनने की दिशा में तेजी से अग्रसर है।

नगर अध्यक्ष प्रतिनिधि प्रभात साहू ने कहा कि, दानेश्वर धाम सदियों से श्रद्धा और आस्था का केंद्र रहा है। इस पावन स्थल पर आयोजित रुद्राभिषेक में लोगों ने केवल प्रधानमंत्री की दीर्घायु ही नहीं, बल्कि राष्ट्र की समृद्धि, सामाजिक सौहार्द और जनकल्याण की भी कामना की। भगवान भोलेनाथ का आशीर्वाद देश और समाज को नई ऊर्जा प्रदान करेगा। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष बुद्धि लाल पासी, भाजपा महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष सुधा अवस्थी, जिला उपाध्यक्ष जन्मेजय सिंह, नगर अध्यक्ष प्रतिनिधि प्रभात साहू, जिला महामंत्री शरद सिंह, महराजगंज मंडल अध्यक्ष अमित श्रीवास्तव, बछरावां मंडल अध्यक्ष मान रावत, प्रधान संघ अध्यक्ष अरुण कुमार सिंह 'दद्दू', जुगन तिवारी, राजकुमार सिंह 'मोंगा', भोलू सिंह, शिवम तिवारी, उमेश कुमार 'कुन्नू', सूर्य प्रकाश वर्मा, सुरेंद्र सिंह 'दाढ़ी', डॉ. माताफेर सिंह, वीरेंद्र सिंह, मोहित सिंह, पंकज श्रीवास्तव, शिवरामण सिंह, राघवेंद्र सिंह, विनीत वैश्य, नूरुल हसन, मनीष सिंह, धर्मेंद्र वर्मा सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे। पूजन के उपरांत श्रद्धालुओं ने सामूहिक आरती में भाग लिया और शिवालय में गूंजते मंत्रों तथा घंटा-घड़ियाल की मधुर ध्वनि के बीच राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना की। दानेश्वर धाम का वातावरण देर तक भक्ति, आस्था और आध्यात्मिक चेतना से ओतप्रोत बना रहा।

विशेष ग्राउंड रिपोर्ट- बाराबंकी के इचौलिया गाँव में 'जल जीवन मिशन' बना जन-आंदोलन, बदल गई 2100 से अधिक ग्रामीणों की तकदीर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

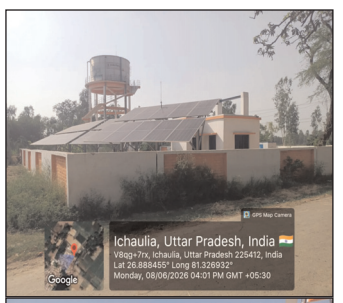

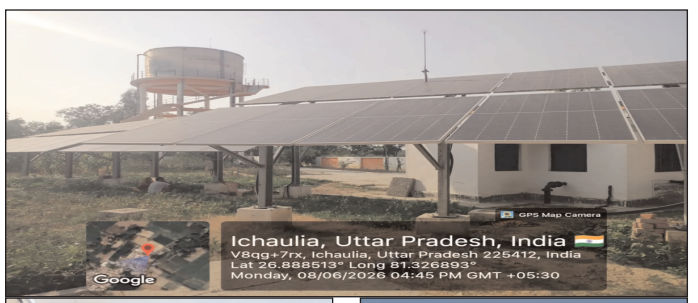

बाराबंकी। ग्रामीण भारत की तस्वीर बदलने और बुनियादी सुविधाओं को अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक पहुँचाने के संकल्प के साथ शुरू हुआ 'जल जीवन मिशन' अब उत्तर प्रदेश के गाँवों में एक बड़े जन-आंदोलन का रूप ले चुका है। इसका सबसे जीवंत और प्रेरणादायी उदाहरण जनपद बाराबंकी के विकास खंड मसौली के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत इचौलिया में देखने को मिल रहा है। कभी दूरस्थ और पिछड़ेपन की मार झेलने वाले इस क्षेत्र में आज पाइपलाइन के जरिए सीधे घरों तक शुद्ध पेयजल पहुँच रहा है, जिसने यहाँ के सामाजिक और स्वास्थ्य परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया है।

लंबी कतारों और दूषित पानी से मिली मुक्ति

कुछ समय पहले तक इचौलिया और उसके आस-पास के गाँवों में सुबह और शाम का वक्त सिर्फ पानी के इंतजाम में बीत जाता था। ग्रामीणों, विशेषकर महिलाओं और बच्चों को पीने के पानी के लिए हैंडपंपों पर लंबी कतारों में खड़ा होना पड़ता था। गर्मियों के दिनों में जब पारंपरिक जल स्रोत और तालाब सूख जाते थे, तो यह समस्या और भी विकराल हो जाती थी। इसके अलावा, जमीन से निकलने वाले आर्सेनिक और बालू युक्त पानी के कारण ग्रामीणों को पेट और त्वचा से जुड़ी तमाम तरह की बीमारियाँ झेलनी पड़ती थीं। जल जीवन मिशन (हर घर जल योजना) के लागू होने के बाद से यह पूरी जद्दोजहद अब इतिहास बन चुकी है। अब गाँव की महिलाओं को पानी के लिए घर से बाहर कदम नहीं रखना पड़ता।

इचौलिया की आधुनिक जल संरचना: विकास का नया मॉडल

विकास खंड मसौली की ग्राम पंचायत इचौलिया में इस योजना को सिर्फ कागजों पर नहीं, बल्कि धरातल पर बेहद आधुनिक और तकनीकी रूप से सुदृढ़ तरीके से उतारा गया है। यहाँ स्थापित किया गया नया वाटर सप्लाई इंफ्रास्ट्रक्चर किसी शहरी टाउनशिप से कम नहीं है। इस परियोजना के अंतर्गत निम्नलिखित अत्याधुनिक प्रणालियाँ तैयार की गई हैं:

उच्च क्षमता वाला ओवरहेड टैंक (शिरोपरि जलाशय): पूरे गाँव में समान दबाव (Water Pressure) के साथ पानी की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए एक विशाल और ऊँचे शिरोपरि जलाशय का निर्माण किया गया है।

» गहरे बोर का नलकूप (ट्यूबवेल): भूजल के शुद्ध और सुरक्षित स्तर तक पहुँचने के लिए गहराई पर बोरिंग की गई है, जिससे स्वच्छ और बिना बालू वाला पानी मिलता है।

» स्वचालित पंप हाउस प्रणाली: पानी की री-फिलिंग और सप्लाई की पूरी प्रक्रिया को ऑटोमैटिक (स्वचालित) बनाया गया है, जिससे मानवीय गलतियों की गुंजाइश खत्म हो गई है।

» सोलर ऊर्जा आधारित संचालन प्रणाली: इस प्लांट की सबसे बड़ी खासियत इसका पर्यावरण-अनुकूल होना है। बिजली संकट से बेअसर, यह पूरी प्रणाली सौर ऊर्जा से संचालित होती है, जिससे बिजली बिल की बचत होती है और जलापूर्ति कभी बाधित नहीं होती।

» मजबूत बाउंड्रीवॉल और सुरक्षा प्रबंध: पूरे परिसर को सुरक्षित रखने के लिए मजबूत सुरक्षा दीवार (बाउंड्रीवॉल) और सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं ताकि सार्वजनिक संपत्ति सुरक्षित रहे।

» व्यापक पाइपलाइन वितरण नेटवर्क: गाँव की हर गली और हर घर को कवर करते हुए एक मजबूत और टिकाऊ पाइपलाइन का जाल बिछाया गया है, जिससे अंतिम छोर पर बसे परिवार को भी पूरा पानी मिल सके।

2172 लोगों के जीवन में आया सकारात्मक बदलाव

इस आधुनिक और सौर-ऊर्जा संचालित व्यवस्था के माध्यम से वर्तमान में इचौलिया गाँव के लगभग 2172 नागरिकों को रोजाना नियमित अंतराल पर स्वच्छ, सुरक्षित और क्लोरीनीकृत पेयजल उपलब्ध कराया जा रहा है।

स्वास्थ्य और समृद्धि का नया सवेरा: शुद्ध पानी मिलने से गाँव में जल जनित बीमारियों (Water-borne diseases) में भारी कमी दर्ज की गई है। स्थानीय पीएचसी (प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र) के आंकड़ों के मुताबिक, दूषित पानी से होने वाली बीमारियाँ अब न के बराबर रह गई हैं। साथ ही, पानी भरने में जो समय बर्बाद होता था, उसका उपयोग अब महिलाएँ स्वरोजगार और बच्चे पढ़ाई में कर रहे हैं। इचौलिया की यह सफलता कहानी अब मसौली ब्लॉक के अन्य पिछड़े गाँवों के लिए एक 'रोल मॉडल' बन गई है। यह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि यदि सरकारी योजनाओं को सही तकनीक और स्थानीय जनभागीदारी के साथ लागू किया जाए, तो ग्रामीण भारत का कायाकल्प दूर की कौड़ी नहीं है।

वृन्दा द डिटेक्टिवः सच्चाई की वो शेरनी, जो अंधेरे में भी रोशनी बनकर चमकती है!

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कल्पना कीजिए... एक ऐसी दुनिया जहाँ सत्ता के गलियारों में भ्रष्टाचार की काली छाया फैली हुई है, पत्रकारों की आवाजें गोलियों से दबाई जा रही हैं, और न्याय की तलाश में एक अकेली महिला बिना डरे आगे बढ़ रही है। यही है डॉ. ज्ञानवती दीक्षित की रोमांचक कृति 'वृन्दा द डिटेक्टिव' - एक ऐसा जासूसी उपन्यास जो हिंदी श्ब्ह्यश्च द्धष्ह्ृद्धश्ठ्ठ की परंपरा को नई ऊर्जा देता है।

कहानी का जादू

उपन्यास की शुरुआत ही दिल दहला देने वाली है। ईमानदार पत्रकार सुनील मजूमदार की निर्मम हत्या हो जाती है। वह अनाज घोटाले और सरकारी जमीन की अवैध प्लॉटिंग जैसे बड़े-बड़े घोटालों की पोल खोल रहा था। शक्तिशाली नेता, भ्रष्ट अफसर और पुलिस का गठजोड़ - सब एक साथ। लेकिन सुनील की मौत के बाद मैदान में उतरती है वृन्दा जोशी - 'द टाइम्स' अखबार की दबंग, खूबसूरत और बेहद स्मार्ट रिपोर्टर, जिसे लोग प्यार से 'वृन्दा द डिटेक्टिव' कहते हैं। वृन्दा कोई सुपरहीरो नहीं है। वह एक साधारण महिला है - जिसके पास तेज़ दिमाग, स्पाई कैमरा वाला पेन, इमरजेंसी पिस्तौल और सबसे बड़ी बात सत्य के प्रति अटूट विश्वास है। वह सुनील के परिवार से लेकर आलसी पुलिसवालों, ष्टष्टञ्जङ्क फुटेज, नीली सैंट्रो कार और स्थानीय गवाहों तक हर सुराग को खंगालती है। बीच-बीच में धमकियाँ आती हैं, लेकिन वृन्दा का जज्बा और तेज़ हो जाता है।

लेखिका का नजरिया

डॉ. ज्ञानवती दीक्षित ने इस उपन्यास की शुरुआत में खुलकर बताया है कि बचपन से उन्हें जासूसी कहानियाँ पढ़ने का शौक रहा है। देवकीनंदन खत्री, गुलशन नंदा, वेद प्रकाश शर्मा जैसी हस्तियों की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने वृन्दा को गढ़ा है। यह उपन्यास सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ का आईना भी है। इसमें दिखाया गया है कि आजकल ईमानदार पत्रकारिता कितनी खतरनाक हो गई है। नेता-अफसर-पुलिस का त्रिकोण कैसे आम आदमी की आवाज को कुचल देता है। लेकिन साथ ही यह उम्मीद भी जगाता है - कि एक साहसी इंसान अकेला भी कितना बड़ा बदलाव ला सकता है।

क्यों पढ़ें यह किताब?

» रोमांचक प्लॉटः हर पृष्ठ पर नया ट्विस्ट, suspense और एक्शन।

» मजबूत नायिकाः वृन्दा जोशी - आधुनिक, सशक्त और relatable।

» सरल भाषाः आसान हिंदी में लिखा गया, जो आम पाठक को भी आसानी से खींच ले।

» संदेशः सत्य और न्याय की लड़ाई कभी हार नहीं मानती।

» 'वृन्दा द डिटेक्टिव' न सिर्फ एक जासूसी उपन्यास है, बल्कि उन हजारों सुनील मजूमदारों को श्रद्धांजलि है जो सच्चाई की खातिर अपनी जान गँवा बैठते हैं।

अगर आप रोमांच, रहस्य, सामाजिक मुद्दों और एक द्धड्डह्लह्यद्दद्धह्यद्ध महिला नायक की कहानी पसंद करते हैं, तो यह किताब आपके लिए परफेक्ट है।

वृन्दा कहती है- 'सत्य और न्याय की लड़ाई में शहीद होने वालों को मातम नहीं, याद किया जाता है। 'क्या आप तैयार हैं इस लड़ाई में वृन्दा के साथ कदम मिलाने को?

पढ़िए 'वृन्दा द डिटेक्टिव'- और खुद महसूस कीजिए कि साहस क्या होता है!लेखिकाः डॉ. ज्ञानवती दीक्षित

कुल पृष्ठः 160

शैलीः रहस्य रोमांच + सामाजिक यथार्थ

संक्षिप्त खबरें

श्रीभूमि जेल के अंदर भी चल रहा था अवैध कारोबार! चार जेलकर्मी गिरफ्तार

श्रीभूमि: असम श्रीभूमि जेल के कारागार के भीतर कथित तौर पर अवैध गतिविधियों के संचालन के मामले में पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए चार जेलकर्मियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों में रुद्र देउरी, विश्वजीत बरुआ, मुसाहिद अली लस्कर और शुभाशीष घोष शामिल हैं। पुलिस के अनुसार, जेल के अंदर नियमों का उल्लंघन कर आपराधिक गतिविधियों को बढ़ावा देने और अन्य अनियमितताओं में उनकी संलिप्तता की जांच की जा रही है। मामले की गंभीरता को देखते हुए विस्तृत जांच शुरू कर दी गई है। इस कार्रवाई के बाद जेल प्रशासन और सुरक्षा व्यवस्था पर भी कई सवाल खड़े हो गए हैं। पुलिस का कहना है कि जांच के आधार पर आगे और गिरफ्तारियां या कार्रवाई भी की जा सकती है।

दिल्ली में आवासीय क्षेत्रों में चल रहे रेस्टोरेंट्स पर हुआ सख्त, नियम ताख पर रखने वालों पर एक्शन का आदेश

नई दिल्ली। पर्यावरणीय नियमों का उल्लंघन करके आवासीय क्षेत्र में संचालित रेस्टोरेंट्स के खिलाफ उचित कार्रवाई करने का नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (NGT) ने दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (DPCC) को आदेश दिया है। एनजीटी चेयरमैन न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव की अध्यक्षता वाली पीठ ने डीपीसीसी को आवेदन में लगाए गए आरोपों की जांच कर तेजी से आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। उक्त निर्देश के साथ एनजीटी ने आवेदन का निपटारा कर दिया।

ध्वनि और वायु प्रदूषण से परेशानी

आवेदनकर्ता ऋषि जिंदल ने आरोप लगाया था कि कुछ रेस्टोरेंट्स आवासीय क्षेत्र में संचालित हो रहे हैं तथा उनके द्वारा लगाई गई चिमनियां निर्धारित मानकों के अनुरूप नहीं हैं। इसके अलावा ध्वनि प्रदूषण एवं वायु प्रदूषण से स्थानीय निवासियों को परेशानी हो रही है। इस पर एनजीटी ने डीपीसीसी को कहा कि आवासीय क्षेत्र में पर्यावरण नियमों का उल्लंघन अगर किया जा रहा है तो डीपीसीसी इलाके का निरीक्षण करे और आरोपों की सत्यता का पता लगाए। एनजीटी ने स्पष्ट किया है कि यदि जांच में पर्यावरणीय मानकों का उल्लंघन पाया जाता है, तो संबंधित प्रतिष्ठानों के विरुद्ध दंडात्मक कार्रवाई की जाए।

राघव चड्ढा ने 17 दिनों की खामोशी तोड़ी, PM मोदी को लेकर कही बड़ी बात

नई दिल्ली। बीजेपी नेता और राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने 17 दिनों की लंबी खामोशी के बाद सोशल मीडिया पर फिर सक्रिय हुए हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की तारीफ करते हुए एक लंबा ट्वीट किया है। आखिरी बार 23 मई को उन्होंने बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन को जन्मदिन की शुभकामनाएं दी थीं। उसके बाद नीट पेपर लीक समेत विभिन्न परीक्षाओं में गड़बड़ियों को लेकर उनकी चुप्पी पर काफी चर्चा हो रही थी। राघव चड्ढा ने अपने ट्वीट में लिखा कि 10 जून 2026 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 4,399 दिनों का लगातार कार्यकाल पूरा कर भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के 4,398 दिनों के रिकॉर्ड को पार कर गए हैं। उन्होंने इसे भारतीय गणतंत्र के इतिहास में सबसे लंबे समय तक लगातार चुने गए प्रधानमंत्री बनने की उपलब्धि बताया।

तीन बार निरंतर विश्वास हासिल करना सामान्य उपलब्धि नहीं: चड्ढा

उन्होंने भारत की विविधता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 1.4 अरब लोगों वाले इस देश में 22 अनुसूचित भाषाएं, सैकड़ों बोलियां, कई धर्म, जातियां और समुदाय एक साथ रहते हैं। दुनिया की सबसे बड़ी लोकतंत्र व्यवस्था में लगभग 98 करोड़ मतदाताओं के बीच तीन बार (2014, 2019 और 2024) निरंतर विश्वास हासिल करना सामान्य उपलब्धि नहीं है। राघव चड्ढा ने यह भी कहा कि नेहरू जी का कार्यकाल एक पार्टी के प्रभुत्व का दौर था, जबकि मोदी जी ने गठबंधन और क्षेत्रीय दलों के कड़े मुकाबले वाले दौर में लगातार बहुमत हासिल किया है। उन्होंने इसे बेहद कठिन उपलब्धि करार दिया और देशवासियों से इस ऐतिहासिक क्षण पर विचार करने की अपील की।

लंबे समय से जियो सेवा बाधित, मॉडल विलेज कृष्णानगर के ग्रामीण परेशान

- 5G युग में भी वे ठीक से 2G नेटवर्क पर बातचीत नहीं कर पा रहे हैं, ऐसी स्थिति बनी।

टेलीकॉम मंत्री का ध्यान आकर्षित किया गया।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि: 5G युग में जहां तेज़ इंटरनेट आम जीवन का हिस्सा बन चुका है, वहीं श्रीभूमि जिले के दुल्लभछड़ा क्षेत्र के दरगारबंद ग्राम पंचायत अंतर्गत मॉडल विलेज कृष्णानगर और छनटिला गांव के लोग आज भी 2G नेटवर्क पर भी सही तरीके से बात नहीं कर पा रहे हैं। स्थानीय लोगों का आरोप है कि लंबे समय से नेटवर्क समस्या को लेकर कई बार शिकायतें की गई, जिसके बाद संबंधित जियो कंपनी ने क्षेत्र में एक मोबाइल टावर स्थापित किया। लेकिन टावर लगाए जाने के दो से तीन महीने बीत जाने के बाद भी उसे अभी तक चालू नहीं किया गया है, जिससे ग्रामीणों को अपेक्षित मोबाइल नेटवर्क सेवा नहीं मिल पा रही है।

ग्रामीणों का कहना है कि घर के अंदर तो दूर, कई बार पूरे इलाके में मोबाइल नेटवर्क बिल्कुल नहीं मिलता। 5G युग में भी वे ठीक से 2त्न नेटवर्क पर बातचीत नहीं कर पा रहे हैं, ऐसी स्थिति बनी हुई है। इस संबंध में जियो कस्टमर केयर और स्थानीय प्रशासन से कई बार शिकायत करने के बावजूद अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है, ऐसा पीड़ितों का कहना है।

इंटरनेट सेवा बाधित होने के साथ-साथ सामान्य फोन कॉल करने में भी लोगों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे आपातकालीन संपर्क व्यवस्था भी प्रभावित हो रही है। वहीं, सेवा न मिलने के बावजूद मोबाइल रिचार्ज की वैधता समाप्त हो रही है, जिसका कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिल पा रहा है। नेटवर्क समस्या का असर शिक्षा पर भी पड़ रहा है। ऑनलाइन पढ़ाई बाधित होने से छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है।

साथ ही व्यापार, डिजिटल लेन-देन और विभिन्न सरकारी ऑनलाइन सेवाओं का उपयोग भी मुश्किल हो गया है। वर्तमान समय में जब इंटरनेट और मोबाइल संचार जीवन की मूल आवश्यकता बन चुके हैं, ऐसे में कृष्णानगर और छनटिला क्षेत्र के लोग इस बुनियादी सुविधा से वंचित होकर कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। इस स्थिति में ग्रामीणों ने टेलीकॉम मंत्रालय, संबंधित कंपनी और जिला प्रशासन से जल्द से जल्द जियो टावर चालू कर स्थायी समाधान की मांग की है।

एडीजी जोन अनुपम कुलश्रेष्ठ ने उरई में परीक्षा केंद्रों का किया निरीक्षण

कानपुर। अनुपम कुलश्रेष्ठ, अपर पुलिस महानिदेशक, कानपुर जोन, कानपुर द्वारा जनपद जालौन भ्रमण दौरान आरक्षी नागरिक पुलिस एवं समकक्ष पदों पर सीधी भर्ती-2025 की आयोजित लिखित परीक्षा की निष्पक्षता, पारदर्शिता एवं सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लेने हेतु परीक्षा केन्द्रों का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान राजकीय इंटर कालेज, उरई व श्री गांधी इंटर कालेज, उरई में परीक्षा संचालन, अभ्यर्थियों की प्रवेश प्रक्रिया, सुरक्षा प्रबंध, सीसीटीवी निगरानी एवं अन्य व्यवस्थाओं का गहन अवलोकन कर संबंधित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये। इस अवसर पर आकाश कुलहरि, पुलिस महानिरीक्षक, झांसी परिक्षेत्र, झांसी, विनय कुमार सिंह, पुलिस अधीक्षक जनपद जालौन सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे। भर्ती परीक्षा को सकुशल, शांतिपूर्ण एवं पूर्ण पारदर्शिता के साथ संपन्न कराने हेतु सभी संबंधित अधिकारियों को सतर्कता एवं उत्तरदायित्व के साथ कार्य करने के निर्देश दिए गए।

36 साल पुरानी फिल्म की कॉपी निकली द्यश्चद्बड्ड, सोशल मीडिया पर उड़ी आलिया भट्ट की स्पाई थ्रिलर की धज्जियां?

- आलिया भट्ट की अगली फिल्म का नाम ऐल्फा
- इस पुरानी फिल्म का कॉपी होने का दावा
- चर्चा में आलिया भट्ट की स्पाई थ्रिलर ऐल्फा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली। बी टाउन की लेडी सुपरस्टार आलिया भट्ट की मोस्ट अवेटेड मूवी ऐल्फा का टीजर आज रिलीज हो गया है। निर्देशक शिव रवैल और निर्माता आदित्य चोपड़ा की ये स्पाई थ्रिलर अब अन्य वजह से चर्चा में आ गई है। ऐल्फा का टीजर देखने के बाद सोशल मीडिया पर फिल्म को कॉपी किए जाने का आरोप लग रहा है। तमाम यूजर्स की तरफ से ये दावा किया जा रहा है कि 36 साल पहले रिलीज होने वाली एक विदेशी फिल्म और ऐल्फा के कई सीन्स एक जैसे हैं। पूरा मामला क्या है, आइए इस लेख में विस्तार से जानते हैं।

ऐल्फा को लेकर चर्चा शुरू

बुधवार को यशराज फिल्म्स की ओर से फिल्म ऐल्फा का लेटेस्ट टीजर रिलीज किया गया है। टीजर में अभिनेत्री आलिया भट्ट और अभिनेता बॉबी देओल की झलक देखने को मिली है। टीजर से ये साफ हुआ है कि आलिया फिल्म में बॉबी की बेटी का रोल प्ले कर रही हैं, जिन्हें बॉबी सीक्रेट मिशन को अंजाम देने के लिए कड़ी ट्रेनिंग देते हैं। लेकिन टीजर रिलीज होने के तुरंत बाद, सोशल मीडिया यूजर्स ने ऐल्फा और साल 1990 में सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली फ्रेंच एक्शन-थ्रिलर फिल्म 'ला फेम निकिता' के बीच समानताएं बतानी शुरू कर दीं। कई यूजर्स ने गौर किया कि इन दोनों फिल्मों की कहानियां एक ऐसी युवा महिला के इर्द-गिर्द घूमती हैं जिसे एक शक्तिशाली संगठन या मेंटर द्वारा भर्ती किया जाता है,

ट्रेनिंग दी जाती है और एक खतरनाक हत्यारे में रूप में बदल दिया जाता है। कई यूजर्स ने उस फ्रेंच क्लासिक फिल्म के क्लिप और तस्वीरें शेयर कीं और कहा कि ऐल्फा की शुरुआत में दिखाई गई कहानी का मूल आधार 'ला फेम निकिता' जैसे ही लग रहा है। इस तरह से फिलहाल ऐल्फा सुर्खियां बटोर रही है।

कब रिलीज होगी ऐल्फा

टीजर रिलीज के साथ मेकर्स की तरफ से ऐल्फा की नई रिलीज डेट का भी एलान किया गया है। 3 जुलाई 2026 को आलिया भट्ट की ये स्पाई थ्रिलर सिनेमाघरों में रिलीज की जाएगी। मालूम हो कि फिल्म जिगरा के बाद आलिया ऐल्फा के जरिए बड़े पर्दे पर वापसी करने जा रही हैं।

श्रीभूमि जिले के आनिपुर में 'असम माला' परियोजना का कार्य अधूरा, हजारों लोग परेशान!

- क्षेत्रवासियों ने जिला प्रशासन और लोक निर्माण विभाग से तत्काल हस्तक्षेप की मांग

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि: असम के हाइलाकांदी जिले के आयनाखाल से श्रीभूमि जिले के असिमगंज तक चल रही 'असम माला' सड़क चौड़ीकरण एवं आधुनिकीकरण परियोजना का कार्य आनिपुर क्षेत्र में आकर अधूरा पड़ गया है। इसके चलते स्थानीय लोगों को रोजाना भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। परियोजना के तहत कई स्थानों पर पुल एवं पुलियों का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है तथा कुछ हिस्सों में डामरीकरण भी किया गया है। लेकिन आनिपुर बाजार से आनिपुर तेमाथा तक का अत्यंत महत्वपूर्ण एवं व्यस्त सड़क खंड लंबे समय से अधूरा पड़ा हुआ है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि निर्माण कार्य की जिम्मेदारी संभाल रही बिन्नी कंस्ट्रक्शन कंपनी ने सड़क पर केवल पत्थर बिछाकर कार्य को अधर में छोड़ दिया है।

स्थानीय नागरिकों के अनुसार, लगातार धूप रहने पर सड़क पर धूल और रेत का गुबार छा जाता है, जिससे राहगीरों और वाहन चालकों को काफी परेशानी होती है। वहीं, हल्की बारिश होते ही सड़क कीचड़ में तब्दील हो जाती है और आवागमन जोखिम भरा बन जाता है। यह सड़क क्षेत्र की प्रमुख जीवनरेखा मानी जाती है।

प्रतिदिन हजारों लोग श्रीभूमि जिला मुख्यालय आने-जाने के लिए इसी मार्ग का उपयोग करते हैं। इसके अलावा स्कूल, कॉलेज और अस्पताल जाने वाले विद्यार्थियों तथा आम नागरिकों के लिए भी यह मुख्य सड़क है। सड़क की बदहाल स्थिति के कारण ऑटो, ई-रिक्शा और दोपहिया वाहन अक्सर फिसलकर दुर्घटनाग्रस्त हो रहे हैं। निर्माण कंपनी की कथित लापरवाही को लेकर स्थानीय व्यापारियों और आम लोगों में भारी नाराजगी देखी जा रही है। उनका कहना है कि 'असम माला' जैसी महत्वाकांक्षी परियोजना का कार्य निर्धारित समय में पूरा होना चाहिए था, लेकिन घनी आबादी वाले बाजार क्षेत्र को महीनों से बदहाल स्थिति में छोड़ दिया गया है, जिससे आम जनजीवन प्रभावित हो रहा है। क्षेत्रवासियों ने जिला प्रशासन और लोक निर्माण विभाग से तत्काल हस्तक्षेप की मांग करते हुए आनिपुर बाजार से तेमाथा तक सड़क निर्माण एवं डामरीकरण का कार्य युद्धस्तर पर पूरा कराने की अपील की है, ताकि लोगों को इस गंभीर समस्या से शीघ्र राहत मिल सके।

दिल्ली के सरकारी स्कूलों में बनेंगे स्विमिंग पूल, मिनी स्टेडियम और ऑडिटोरियम

पूर्वी दिल्ली। सरकारी स्कूलों को आधुनिक और प्रतिस्पर्धी बनाने की दिशा में कृष्णा नगर विधानसभा क्षेत्र में बड़े स्तर पर स्कूलों का विकास किया जाएगा। इसके तहत स्कूलों में न केवल शैक्षणिक सुविधाओं को मजबूत किया जाएगा, बल्कि खेल और अन्य गतिविधियों के लिए भी अत्याधुनिक संसाधन उपलब्ध कराए जाएंगे। झील के स्कूल में स्वीमिंग पूल और मिनी स्टेडियम बनाया जाएगा जबकि अन्य स्कूलों में आडिटोरियम आदि प्रस्तावित हैं।

अधिकारियों के अनुसार इनका उद्देश्य छात्रों को बेहतर माहौल के साथ हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करना है।योजना के अनुसार झील स्थित विद्यालय में स्विमिंग पूल और मिनी स्टेडियम का निर्माण किया जाएगा। इन सुविधाओं के विकसित होने से विद्यार्थियों को तैराकी सहित विभिन्न खेलों में प्रशिक्षण के बेहतर अवसर मिलेंगे और उनकी प्रतिभा को निखारने में मदद मिलेगी।

आधुनिक ऑडिटोरियम के साथ नए भवन का निर्माण प्रस्तावित

वहीं, सर्वोदय कन्या विद्यालय चंद्र नगर में आधुनिक आडिटोरियम के साथ नए भवन का निर्माण प्रस्तावित है, जिसमें लगभग 50 नए कमरे बनाए जाएंगे। इससे स्कूल में पढ़ाई के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध होगा और सांस्कृतिक व शैक्षणिक गतिविधियों को भी नया मंच मिलेगा। अधिकारियों के अनुसार निर्माण का प्रस्ताव पास हो चुका है। जल्द ही इन कामों के टेंडर जार कर काम शुरू कर दिया जाएगा। अगले दो-तीन माह में छात्र इन सुविधाओं का लाभ उठा सकेंगे।

विधायक ने किया निरीक्षण

कृष्णा नगर के विधायक डॉ. अनिल गोयल ने काम शुरू होने से पहले स्कूलों का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि इन परियोजनाओं के जरिए सरकारी स्कूलों को निजी स्कूलों के समान सुविधाएं देने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि छात्रों को बेहतर संसाधन मिल सकें। अधिकारियों को सभी निर्माण कार्य निर्धारित समय सीमा में पूरा करने और गुणवत्ता मानकों का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए गए हैं। विकास कार्यों के पूरा होने के बाद क्षेत्र के हजारों विद्यार्थियों को सीधा लाभ मिलेगा। इससे शिक्षा के स्तर में सुधार होगा और खेल प्रतिभाओं को भी प्रोत्साहन मिलेगा, जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास संभव हो सकेगा।

टेरर फंडिंग मामले में एक्टिविस्ट खुर्रम परवेज को बड़ी राहत, दिल्ली ॥ष्ट से मिली जमानत

नई दिल्ली। आतंकी फंडिंग व आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के लिए युवकों को भर्ती कराने के आरोपित कश्मीरी मानवाधिकार कार्यकर्ता खुर्रम परवेज को बुधवार को दिल्ली हाई कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। हाई कोर्ट ने खुर्रम परवेज को राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) द्वारा उनके खिलाफ दर्ज UAPA मामले में सशर्त जमानत दे दी। राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने गैर-कानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) के खुर्रम परवेज को 22 नवंबर 2021 को गिरफ्तार किया गया था। ट्रायल कोर्ट ने 17 दिसंबर 2024 को खुर्रम की जमानत याचिका खारिज कर दी थी और उक्त निर्णय को खुर्रम ने 24 दिसंबर, 2024 को हाई कोर्ट में चुनौती दी थी। बेंच ने फैसला सुनाते हुए कहा, 'हमने कई शर्तों के साथ जमानत दे दी है।' पुलिस हिरासत में कई बार रिमांड पर रखने के बाद 25 फरवरी 2022 को उन्हें न्यायिक हिरासत में भेजा गया था। 19 दिसंबर 2024 को अपील दाखिल करते समय परवेज कुल मिलाकर करीब 3 साल 1 महीने से जेल में थे।

कोर्ट ने सुखविंदर सिंह के पोस्टमार्टम को 72 घंटे के लिए स्थगित करने का हवाला दिया

- विधर्मियों की तलाश के भी दिए निर्देश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लुधियाना, न्यायालय ने करणबीर सिंह बत्रा, न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी, लुधियाना, सुखविंदर सिंह पुत्र अवतार सिंह निवासी गांव किला लाल सिंह, बटाला, जिला गुरदासपुर की मृत्यु के बाद उनके पोस्टमार्टम को 72 घंटे के लिए स्थगित करने के आदेश जारी किए हैं। सहायक सुपरिटेंडेंट सेंट्रल जेल, लुधियाना ने सूचित किया कि निम्न संदर्भ जो मामला संख्या 127 दिनांक 01-05-2025 धारा 333/191(3)/190/351(2)/324 (4)/62 बीएनएस है।

दिनांक 03-05-2025 को थाना प्रभाग संख्या 5 लुधियाना के अंतर्गत इस जेल में भर्ती था। सूचना मिली कि सुखविंदर सिंह पुत्र अवतार सिंह का पोस्टमार्टम 09-06-2026 को सुबह 06:35 बजे सेंट्रल जेल, लुधियाना में हो गया था, परन्तु इस संदर्भ का कोई उत्तराधिकारी नहीं होने के कारण माननीय न्यायालय श्री करणबीर सिंह बत्रा, न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी, लुधियाना के द्वारा प्रशस्ति पत्र का पोस्टमार्टम स्थगित कर दिया गया है 72 घंटे के लिए और प्रशस्ति पत्र के उत्तराधिकारी को खोजने के आदेश भी जारी किए गए हैं। सहायक सुपरिटेंडेंट सेंट्रल जेल, लुधियाना की आम जनता से अपील है कि अगर संदर्भ में सुखविंदर सिंह पुत्र अवतार सिंह के वारिसों के बारे में कोई जानकारी है, तो वे सेंट्रल जेल नियंत्रण नंबर 0161-2660106 पर संपर्क कर सकते हैं।

सिला मेचू असीमिया गांव में विद्युतपृष्ठ होकर महिला की मौत

- विद्युत विभाग की लापरवाही की आरोप।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

असम धेमाजी। आज दोपहर सीसीबरगांव रिहायशी इलाके के मेचू असमिया गांव में एक महिला की करंट लगने से मौत हो गई। पीड़िता, महिला मेचू असमिया गांव के बिमल शैकिया की 56 वर्षीय पत्नी दीपाली शैकिया ने सुबह करीब 11.30 बजे हंस भगाने के लिए सड़क किनारे जाते है सड़क किनारे 220 वोल्ट का तार टूटा हुआ था। दुर्भाग्य से, महिला टूटे हुए बिजली के तार पर पैर रख गई और तुरंत वही मृत्यु हो गई। पीड़िता को तुरंत सिलापथार आदर्श अस्पताल ले जाया गया लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सिलापथार बिजली सब-डिवीजन के तहत मेचू असमिया गांव के सेक्शन की कभी मरम्मत नहीं की गई है। अगर किसी कारण से तार टूट जाता है, तो इलेक्ट्रीशियन तार का दूसरा टुकड़ा जोड़ देते हैं। इस वजह से इस सेक्शन में दो पोल के बीच 27 जोड़े से बिजली परिवहन कर रहा था। लोगों ने बिजली डिपार्टमेंट को बार-बार बताया लेकिन कोई कदम नहीं उठाया। पीड़ित के परिवार ने दिए जानकारी अनुसार बिजली डिपार्टमेंट के खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज करने वाले हैं। सरकार और एडमिनिस्ट्रेशन से गरीब परिवार को मुआवजा देकर मदद की मांग की है।

दुनियाभर में पेद्दी की हुकूमत, 6 दिनों में बॉक्स ऑफिस पर लहरा दिया सफलता का परचम

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली। राम चरण और जाह्नवी कपूर की फिल्म 'पेद्दी' बॉक्स ऑफिस पर लगातार गदर मचा रही है। घरेलू बॉक्स ऑफिस पर मूवी की रफ्तार भले ही धीमी पड़ रही हो, लेकिन दुनियाभर में यह मूवी बुलेट ट्रेन की रफ्तार से दौड़ रही है। स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म के बुधवार का कलेक्शन भी सामने आ चुका है, जो बेहद सरप्राइजिंग है। पेद्दी वर्ल्डवाइड बॉक्स ऑफिस पर एक और रिकॉर्ड बनाने के करीब पहुंच चुकी है।

बुधवार को 'पेद्दी' ने दुनियाभर में किया ताबड़तोड़ कलेक्शन

दुनियाभर में 135 करोड़ से ओपनिंग करने वाली 'पेद्दी' ने 6 दिन में ही बॉक्स ऑफिस के सिंहासन से कई बड़ी फिल्मों को खिसका दिया है। मेकर्स ने बुधवार को फिल्म के वर्ल्डवाइड कलेक्शन के आंकड़े शेयर कर दिए हैं। स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म 'पेद्दी'ने दुनियाभर में 332.1 करोड़ की कमाई महज 6 दिनों के अंदर कर ली है, जो काफी इम्प्रेसिव है। दुनियाभर में इस मूवी ने 1 दिन में लगभग 20 करोड़ के आसपास की कुल कमाई की है। सैकनिल्क डॉट कॉम की रिपोर्ट्स के मुताबिक, ओवरसीज मार्केट में इस मूवी ने 48 करोड़ तक का कलेक्शन किया है। यह फिल्म जल्द ही 350 करोड़ के क्लब में शामिल हो जाएगी।

बजट निकालने से बस अब कुछ ही दूर है 'पेद्दी'

बुची बाबू के निर्देशन में बनी राम चरण स्टारर फिल्म 'पेद्दी' अपने बजट निकालने के काफी करीब पहुंच चुकी है। इस मूवी का बजट तकरीबन 350 करोड़ के आसपास है। जैसे ही पेद्दी 18 करोड़ की कमाई और दुनियाभर में कर लेती है, तो वह अपना पूरा बजट रिकवर कर लेगी और प्रॉफिट की तरफ कदम बढ़ा देगी। आपको बता दें कि पेद्दी की शूटिंग कम्प्लीट करने में मेकर्स को कुल 220 दिन लगे थे। फिल्म में राम चरण के किरदार की तो तारीफ हुई, लेकिन जाह्नवी कपूर को ओवर सेक्सुअलाइज दिखाने की वजह से निर्देशक को सोशल मीडिया यूजर्स ने काफी खरी खोटी सुनाई।

राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र में बच्चे सीख रहे भविष्य की तकनीकें, बन रहे वैज्ञानिक

नई दिल्ली। भविष्य अब केवल कल्पनाओं या साइंस फिक्शन फिल्मों तक सीमित नहीं है। अब नई पीढ़ी इन तकनीकों को अपनी उंगलियों पर नचा रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) गेमिंग, रोबोटिक्स और ड्रोन मेकिंग के इस आधुनिक युग में बच्चे किताबों के रटे-रटाए ज्ञान से बाहर निकलकर खुद अपने हाथों से भविष्य की दुनिया की रूपरेखा तैयार कर रहे हैं। वह भी तब जब इस गर्मी की छुट्टियों में अधिकांश बच्चे अभिभावकों के साथ छुट्टियां मना रहे हैं। वहीं, ये छात्र मस्ती छोड़ प्रयोग के जरिये भूगर्भ से लेकर क्षितिज तक नाप रहे हैं। राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र ऐसे किशोर वैज्ञानियों की कल्पनाओं को पंख देने वाला अहम और अत्याधुनिक ठिकाना बना हुआ है। केंद्र में विज्ञानी खिलौना निर्माण, खगोल लैब, वंडर आफ इलेक्ट्रॉनिक्स विद एआई टूल, एआइ एंड कंप्यूटेशनल थिंकिंग, गेमिंग, थ्रीडी प्रिंटिंग और बेसिक्स आफ बायोटेक्नोलाजी जैसे नौ अत्याधुनिक विषयों पर नवाचार का महाकुंभ लगा है। इसे सीखने के लिए देश के विभिन्न राज्यों से बच्चे अपने माता-पिता के साथ पहुंच रहे हैं। **विदेशी तकनीक को मात, स्वदेशी किट से आत्मनिर्भरता** राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र के शिक्षा अधिकारी दिनेश मलिक बताते है कि इन दिनों पूरा परिसर वैज्ञानिक चेतना के रंग में रंगा है। केंद्र ने आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाते हुए एक बड़ा बदलाव किया है। रोबोटिक एसोसिएट क्यूरेटर धीमान सरकार के मार्गदर्शन में बच्चे ऐसी रोबोटिक हाथ बना रहे हैं, जो इंसानी हाथों की तरह लचीली है।

मुज़फ़्फ़राबाद के पास पाकिस्तानी सेना का Mi-17 हेलीकॉप्टर क्रैश, 21 सैनिकों की मौत

- सेना ने बताया कि घटना की सूचना मिलने के बाद बचाव और रिकवरी टीमों को तुरंत दुर्घटनास्थल पर भेजा गया। अधिकारियों ने जब इस दुखद घटना से जुड़ी परिस्थितियों का आकलन करना शुरू किया, तो आपातकालीन कर्मियों ने इलाके में रिकवरी ऑपरेशन चलाया।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मुज़फ़्फ़राबाद के पास पाकिस्तान आर्मी एविएशन का Mi-17 हेलिकॉप्टर क्रैश हो गया, जिसमें सवार सभी लोगों की मौत हो गई। पाकिस्तानी सेना के मीडिया विंग, इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (ISPR) के बयान के अनुसार, यह हादसा हेलिकॉप्टर के उड़ान भरने के कुछ ही देर बाद हुआ। सेना ने पुष्टि की कि इस हादसे में कोई भी जीवित नहीं बचा। बताया जा रहा है कि हेलिकॉप्टर तकनीकी खराबी के कारण दुर्घटनाग्रस्त हुआ, हालांकि अधिकारियों ने हादसे के सही कारण का पता लगाने के लिए औपचारिक जांच शुरू कर दी है। 'डॉन' के अनुसार, ISPR ने एक आधिकारिक बयान में कहा कि हेलिकॉप्टर में सवार सभी लोग शहीद हो गए। कोई भी जीवित नहीं बचा। सेना ने बताया कि घटना की सूचना मिलने के बाद बचाव और रिकवरी टीमों को तुरंत दुर्घटनास्थल पर भेजा गया। अधिकारियों ने जब इस दुखद घटना से जुड़ी परिस्थितियों का आकलन करना शुरू किया, तो आपातकालीन कर्मियों ने इलाके में रिकवरी ऑपरेशन चलाया।

हादसे की वजह का पता लगाने के लिए जांच के आदेश

पाकिस्तान की सेना ने यह पता लगाने के लिए एक जांच बोर्ड बनाया है कि क्रैश की वजह क्या थी। हालांकि शुरुआती जानकारी से तकनीकी खराबी का संकेत मिलता है, लेकिन जांचकर्ता किसी अंतिम नतीजे पर पहुंचने से पहले सभी संभावित कारणों की जांच करेंगे। सेना के मीडिया मामलों के विभाग ने कहा कि हादसे की सटीक तकनीकी वजह का पता लगाने के लिए एक जांच बोर्ड बनाने का आदेश दिया गया है।' उम्मीद है कि जांच के नतीजों से उन घटनाओं के बारे में और स्पष्टता मिलेगी जिनकी वजह से उड़ान भरने के कुछ ही देर बाद हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

सेना प्रमुख और सैन्य नेतृत्व ने दुख जताया

सेना प्रमुख और चीफ ऑफ डिफेंस फोर्सेज फील्ड मार्शल आसिम मुनीर के साथ-साथ पाकिस्तान सेना के अधिकारियों और जवानों ने क्रैश में जान गंवाने वालों के प्रति गहरा दुख जताया। सैन्य नेतृत्व ने मारे गए लोगों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की और ड्यूटी के दौरान जान गंवाने वाले जवानों को श्रद्धांजलि दी।